अथ विवाह पद्धति

188वां पुष्प

मार्ग प्रदर्शिका नामक टीका सहित
अखिल तंत्र स्वतंत्र पं. जमोतारामात्मज
कवितार्किक ज्योतिष शास्त्रनिष्णात
पं. ज्ञानचन्द्र द्वारा निर्मित

— संशोधक —

पं. कल्याण दास (पुष्टिकर) पुष्करणा लाहौर वाले

तथा

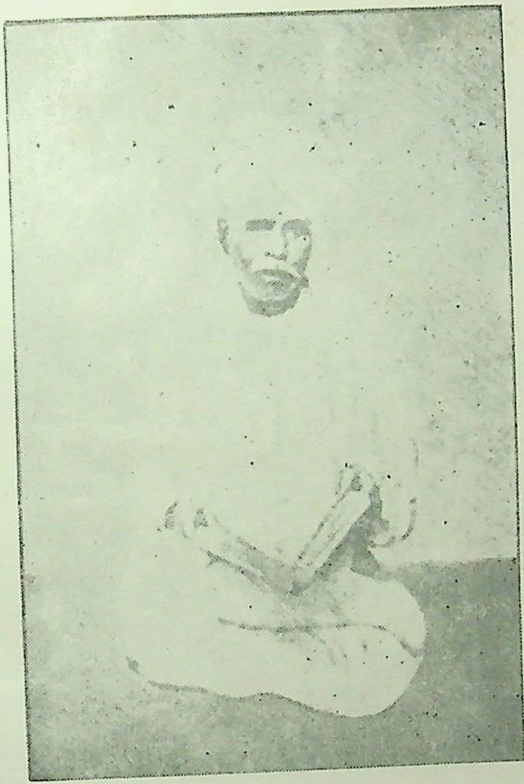
पं. माया राम जी शास्त्री

अध्यक्ष सनातन धर्म सभा मंदिर लाजपत नगर नई दिल्ली

सुकेत (सुन्दर नगर हिमाचल) के अधिपति
राजाधिराज श्री लक्षित सेन जी M.A. विशारद
तथा अनेक भाषाओं के प्रवक्ता,
ब्राह्मण ग्रन्थों तथा वैदिक कर्मकाण्ड के महान्
विद्वान के करकमलों में सादर समर्पित

मूल्य 6.50

प्राप्ति स्थान : C-25 Green Park Extension, New Delhi-16



अनने प्रीयतां तातो जमीतारामपण्डितः।
जनको मे ब्रह्मलोके न्यायवेदान्तकेसरी ॥

॥ ओं श्रीगणेशाय नमः ॥



अथ विवाहपद्धतिः

तत्र कन्याहस्तेन षोडशहस्तपरिमितं मण्डपं विधाय, तद् दक्षिणस्यां दिशि पश्चिमां दिशमाश्रित्य, मण्डपसंलग्नमुत्तराभिमुखं कौतुकागारं विदध्यात्।

घर के आंगन में लड़की[1] के सोलह हाथ ज़मीन मापकर चौकोन मण्डप[2] बनाए यानी (चार हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा) उस मण्डप के दक्षिण की तरफ पश्चिममें, यानी नैर्ऋत्य कोण में मण्डप के साथ उत्तर की तरफ है मुख जिसका ऐसा कौतुकागार बनावे।

---

१. कन्याहस्तेन मण्डपं कुर्यात् वरहस्तेन वेदिकाम्। इति [पराशरः]

२. यज्ञोत्सवविवाहेषु विधायादौ च मण्डप।म्
विवाहोत्सवयज्ञेषु मण्डपं कल्पयेत सुधीः।
सर्वविघ्नविनाशाय सर्वेषां चित्ततुष्टये॥ इति ब्रह्मपुराणे।

मण्डपाद् बहि-रैशान्यां दिशि जामातृचतुर्ह-स्तपरिमितां सिकतादिपरिष्कृतां तुषकेशशर्करा-दिरहितां शून्यवेणुनिर्मितां आम्रपत्रादिशोभितां सुवस्त्राच्छादितां वेदीं च कारयेत् ।

मडण्प[1] से बाहर ईशान कोण में यानी (पूर्व और उत्तर के मध्य की कोण में) वर के चार हाथ के बराबर जमीन मापकर (यानी एक हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी) साफ रेत की बनी हुई, तिनके[2], बाल और कंकरों से रहित, लाठियों से बंनी हुई, आम के पत्तों से सजी हुई और सुन्दर वस्त्र के चंदोये से ढकी हुई वेदी को बनाए ।

विवाहदिने कृतनित्यक्रियेण जामातृपित्रादौ मातृपूजापूर्वकं आभ्युदयिकं[3] कर्तव्यं कन्या पिता च शुचिः स्नात्वा शुक्लांबरधरः कृतनित्यक्रियो मातृपूजाभ्युदयिकं कुर्यात् ।

---

१. कश्यपपराशरौ—मण्डपाद् बहिरीशान्यां सदा कुर्याच्चवेदिकाम् ।
अग्न्यर्थं च विवाहादौ कृतादि त्रियुगेषु वै ।।
कलौ संकोचतः कुर्याद् बहिर्वेदीं च मण्डलात् ।

विवाहादौ लिखेन्नित्यं तिलकं नाम मण्डलम् । कात्यायनसंहितायाम् ।
गृहारामप्रतिष्ठायां दुर्गाहोमे नवग्रहे ।
सर्वतोभद्रकं कुर्यात् विवाहे तिलकं लिखेत् ।। ब्रह्मपुराणे
विघ्नराजो भवेद् यत्र मध्ये नान्यस्तु कश्चन ।
सुमहत् सुन्दरं चैव तिलकं नाम मण्डलम् ।। स्मृतिचन्द्रोदये

२. तुषस्तु धान्यत्वचि विभीतके । इति हेमचन्द्रः ।

३. उक्तकाले विवाहांगं कुर्यात् नान्दी मुखं पिता ।
देशान्तरे विवाहश्चेत्तत्रगत्वा भवेदिदम् ।। इति रेणुकाकारः

अस्मद देशे विवाहदिने नान्दीमुखश्राद्धस्य प्रचारो नास्ति अतः 'विवाहे दश वासराः' इति प्रमाणेन विवाहदिनात् पूर्वमेव नान्दीश्राद्धं कुर्यात् ।।

विवाह के दिन नित्य क्रिया (सन्ध्या और अपने इष्टदेव का पूजन) करके दामाद के पिता को सबसे पहले गौर्यादि षोडशमातृकाओं के पूजन के बाद नान्दीमुख श्राद्ध करना चाहिये। कन्या का पिता शौचादि से पवित्र हो स्नान कर, शुद्ध वस्त्रों को धारण कर सन्ध्योपासन आदि नित्य कर्मों को करके षोडश मातृपूजा के बाद नान्दीमुख श्राद्ध करे।

अथ अर्हणवेलायां मण्डपे यजमानः सपत्नीक उत्तरमुखउपविश्य कुशासने वरः प्राङ्मुख उपविश्य आचम्य, स्वस्तिवाचनं कृत्वा प्रतिज्ञा संकल्पं कारयेत्।

इसके बाद लग्न के समय लड़की का पिता अपनी स्त्री[1] के साथ उत्तर[2] की ओर मुख करके कुशा के आसन पर बैठे और वर पूर्व को ओर मुख करके बैठे, आचमन करें। स्वस्ति वाचन के बाद यजमान प्रतिज्ञा संकल्प करे, इसके बाद वर भी प्रतिज्ञा संकल्प करे।

---

१. जातके नामके चैव ह्यन्नप्राशनकर्मणि।
तथा निष्क्रमणे चैव पत्नी पुत्रश्चदक्षिणे॥
गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तोन्नयने तथा।
वधुप्रवेशने चैव पुनः सन्धान एव च॥
प्रदाने मधुपर्कस्य कन्या दाने तथैव च।
कर्मस्वेतेषु वै भार्यां दक्षिणे तूपवेशयेत्॥
आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा।
शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥ संस्कारदीपके
सीमन्ते च विवाहे च तथा चातुर्थ कर्मणि।
मखे दाने व्रते श्राद्धे पत्नी दक्षिणतो भवेत्॥

२. सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रतिग्राही उदङ्मुखः।
एष एव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्ययः॥ संस्कारभास्करे
प्रत्यङ्मुखं स्थापयेत्तु देवं पूज्यं वरं विना।
वरस्तु प्राङ्मुखः पूज्यः पूजकः स्याद् उदङ्मुखः॥ व्याससमतौ

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः तत् सदद्य मासोत्तमे मासे (महीने का नाम) मासे(पक्ष का नाम)पक्षे शुभतिथौ ('तिथि का नाम) यथा योगकरणमुहूर्तनक्षत्रोपेतायां— (वार का नाम) वासरान्वितायां (गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नः सपत्नीकोऽहंश्रुत्याद्युक्तफलावाप्तिकामोऽवगताऽनवगताऽनेकजन्माधिकरणककायवाङ्मनस्कृतकोटिशोमहापापोपपापशमनपूर्वकश्रीयज्ञपुरुषनारायणप्रीतिपुरस्सरयावज्जीवपुत्रपौत्रप्रपौत्रादिसकलकुटुम्बसहितात्मीयकलेवरानामयदीर्घायुष्ययुक्तधनधान्यसमृद्धिविशिष्टबहुतरसुखभोगावाप्त्यनंतरशतसहस्रशोऽश्वमेधराजसूयगृहमेधज्योतिष्टोमाग्निष्टोमादियागकोटिशःसूर्यग्रहणकालीनबहुतरब्राह्मणसम्प्रदानकदशगुणोत्तरधेन्वनडुद्यानवाजिसर्वस्यसम्पूर्णं सर्वरत्नोपशोभितसर्वपृथ्वीदानजन्यपुण्यप्राप्त्युत्तरैतत्कन्याशरीरावस्थितरोमसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्नपरमानन्दभोगास्पदावाप्तिसहितत्रिदिववासोत्तरकल्पकोटिशतावलीढब्रह्मलोकमहत्तत्त्वोत्तरश्रीविष्णुलोकवासकामनया अनेन वरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसन्तत्याद्वादशावरान्द्वादशपरान् पुरुषांश्च पवित्री कर्त्तुं

आत्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये ब्राह्मार्षप्राजापत्यान्यतमविवाहविधिनाकन्यादानमहं करिष्ये ॥ तन्निर्विघ्नपरिसमाप्तिकामोगणपत्यादिपूजनंवरपूजनं च यथासम्भवमहं करिष्ये ॥

वेदादि में कथित फल प्राप्ति की इच्छा वाला, ज्ञात और अज्ञात अनेक जन्मों के शरीर वाणि और मन से किये करोड़ों महापाप और उपपापों की शांति के लिए श्री यज्ञपुरुषनारायण की प्रीति के लिए जीवन पर्यन्त पुत्र पौत्र प्रपौत्रादि सकल कुटुम्ब के साथ अपने शरीरारोग्य और दीर्घ आयु धन धान्य समृद्धि से युक्त बहुत अच्छे सुख भोगों की प्राप्ति के अनन्तर सैकड़ों हज़ारों अश्वमेध राजसूय गृहमेध ज्योतिष्टोम आदि यज्ञों के फल की प्राप्ति के लिए करोड़ों सूर्य्यग्रहण के समय बहुत ब्राह्मणों को दिये गये दश-गुण अधिक फल वाले धेनु, बैल, बाग, घोड़े, सारी खेतियों से सम्पूर्ण सारे रत्नों से सुशोभित सारी पृथ्वी के दान से पैदा होने वाले पुण्य की प्राप्ति के लिए इस कन्या के शरीर के रोमों की संख्या के समान सहस्रों युगों तक निरन्तर परमानन्द भोग की प्राप्ति सहित स्वर्गवास के बाद करोड़ों कल्पों तक ब्रह्मलोक और महतलोक की प्राप्ति के अनन्तर श्रीवैकुण्ठ लोकवास की कामना से इस कन्या में पैदा होने वाली सन्तान से बारह पूर्व और बारह उत्तर पुरुषों को तथा अपने आप को पवित्र करने के लिए श्री लक्ष्मीनारायण की प्रसन्नता के लिये ब्राह्म[१], आर्ष[२], प्राजापत्य[३], इन तीनों में से किसी एक विवाह की विधि से मैं कन्या दान करता हूँ और उस विवाह के निर्विघ्न समाप्ति की इच्छा से यथा सम्भव वस्तुओं से गणपत्यादि और वर पूजन करता हूँ ।

---

१. ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता ।
तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥ इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ ।

२. यत्र पुनर्गोमिथुनमादाय कन्या दीयते स आर्षः । इति मिताक्षरायाम् ।

३. इत्युक्त्वा चरतां धर्मं सह या दीयतेऽर्थिने ।
स कायः पावयेत्तज्जः षट् षड् वंश्यान् सहात्मना ॥ इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ ।

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः तत् सदद्य मासोत्तमे मासे (महीने का नाम) मासे (पक्ष का नाम) पक्षे शुभतिथौ (तिथि का नाम) यथायोगकरणमुहूर्तनक्षत्रोपेतायां [वार का नाम] वासरान्वितायां (गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नोऽहं

श्रीलक्ष्मीनारायणप्रसादकरणकयावज्जीवं पत्न्या सह ऽऽयुरारोग्यसंपत्तिसमृद्धिपूर्वकपरमसुखप्राप्तये धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं सत्संस्कारस्वकीयोद्वाह-कर्माहंकरिष्ये॥ तन्निर्विघ्नपरिसमाप्तिकामो गणपत्यादीन्यथालब्धोपचारैरर्चयिष्ये ।

मैं लक्ष्मीनारायण की प्रसन्नता से यावज्जीवन पत्नी के साथ आयु आरोग्य सम्पत्ति समृद्धि के लिए परम सुख प्राप्ति के लिए धर्म अर्थ काम की सिद्धि के लिए विवाह संस्कार से अपना विवाह कर्म करता हूँ और निर्विघ्न समाप्ति की इच्छा से गणपत्यादियों का यथा प्राप्त उपचारों से पूजन करता हूँ । इसके बाद वर और यजमान गणेश ओंकार षोडशमातृका नवग्रह और सर्प आदि का पूजन करे ।

लड़की का पिता वर के दहने गोडे पर अपना दहना हाथ रखकर इस मन्त्र को पढ़े—

---

१. कुलं च शीलं च सनाथता चविद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ।
वरे गुणान् सप्त परीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥ इति वसिष्टः ।
सितकुष्टिन्यपस्मारे ब्रह्मघ्ने राजयक्ष्मणि ।
अन्धे च परिवित्तौ च बधिरे दूरदेशगे ॥
व्यसनासक्तचित्ते च न देया कन्यका बुधैः । इति चण्डेश्वरः ।
नात्यासन्ने नातिदूरे नात्याढ्ये नाति दुर्बले ।
वृत्तिहीने च मूर्खे च षट्सु कन्या न दीयते ॥
दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्त्तिनाम् ।
शूराणां निर्धनानां च न देया कन्यका बुधैः ॥ इति वसिष्टः ।
काममामरणं तिष्ठेत् गृहे कन्यर्तुमत्यपि ।
न त्वेनां प्रयच्छेत गुणहीनाय कर्हिचित् ॥ इति नारदः ।

ओं साधु भवानास्तामर्च्चयिष्यामो भवन्तम् ।

(भवान्) आप (साधु) बड़े आराम से (आस्ताम्) बैठिये हम (भवन्तम्) आप का (अर्च्चयिष्यामः) पूजन[1] करेंगे ।

वर कहे—

ओं अर्चय ।

(पूजन कर[2])

लड़की का पिता वर के बैठने के लिए शुद्ध आसन देवे, इसके बाद पण्डित विष्टरे को हाथ में ले यह कहे—

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः[3] ।

(यह विष्टर है यह विष्टर है यह विष्टर है ।)

पण्डित के हाथ से यजमान विष्टर अपने हाथों में लेकर यह पढ़े—

ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ।

(आप विष्टर लीजिये ।

यजमान के हाथ से विष्टर लेकर वर यह पढ़े—

ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि ।

(मैं विष्टर को लेता हूं ।)

---

१. सिंहासनं सुवर्णादि धातुना निर्मितं शुभम् ।
दारुभिर्निर्मितं चाथ शरैर्वा शुद्धमासनम् ।। पराशरः

२. षडर्घ्या भवन्ति :—आचार्य ऋत्विग् वैवाह्यो राजा प्रियस्नातकः ।।
(इति पारस्करगृह्यसूत्रे)

ननु प्रश्ने अर्चयिष्याम इत्यस्य वहुवचनान्तत्वात्
उत्तरे 'अर्चय' इत्येकवचनमसमञ्जसमितिचेन्न
'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' इति शेखरवचनेन एक वचनमपि साधु ।

३. पूजको यजमानस्तु दत्वादौ शुद्धमासनम् ।
तस्योपवेशनार्थं तु विष्टरं प्रददेत्पुनः ।।

आचारत्वाद् एव प्रतिपादित नैष विधिः ।

दोनों हाथों[1] से विष्टर[2] को पकड़ कर लड़का इस मन्त्र को पढ़े ।
(मन्त्रों के विनियोगों[3] की विवाह में आवश्यकता नहीं)

वर्ष्मोऽस्मिसमानाना-मुद्यता मिव सूर्यः ।
इमं त मभि तिष्ठामियो मां कश्चाभिदासति॥

(उद्यताम्) उदय होने वाले नक्षत्रादियों के मध्य में (सूर्यः) सूर्य की (इव) तरह (समानानाम्) अपने बराबर वालों में (वर्ष्मः) श्रेष्ठ (अस्मि) हूँ इसलिए (यः) जो (कः) कोई (मां) मेरा (अभिदासति) तिरस्कार करेगा (तम्) उस पुरुष को (इमम्) इस विष्टर की तरह (अभि) नीचा करके (तिष्ठामि) मैं ऊपर बैठता हूँ ।

इस मन्त्र को पढ़कर उत्तर की तरफ है मुख जिसका ऐसे विष्टर को आसन के ऊपर रख खुद उस पर बैठ जाए (यानी उसे जांघों के नीचे दबा ले) फिर पण्डित अरघे में जल डालकर इस मन्त्र को पढ़े—

ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ।

(पैर धोने के लिए[4] जल है । पैर धोने के लिए जल है । पैर धोने के लिए जल है)

फिर पण्डित जल से भरा हुआ अरघा यजमान को देवे । यजमान उसे पकड़ कर यह कहे—

ओं पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

(आप पैर धोने योग्य जल लीजिये ।)

---

१. यजमानार्पितमुभाभ्यां पाणिभ्यां मध्ये वरो गृह्णाति (इति जयरामः)
२. पञ्चाशता भवेद् ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः । ऊर्ध्व केशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः ॥ दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः ॥
३. अग्निहोत्रे वैश्वदेवे विवाहादि विधौ तथा ।
होमकाले न दृश्यन्ते प्रायच्छन्दर्षि देवताः । (नारदीय कर्मागंपद्धितौ)
४. पादार्थमुदकं पाद्यं 'पादार्घाभ्याञ्चेति' सूत्रेण यत् ।
पादार्थमुदकं कोष्णं ताम्रपात्रे च संस्थितम् ।
तेन प्रक्षालयेत् पादं विधिना च ततः परम् ॥ इति आपस्तम्भः
सत्ये स्वर्णमयं पात्रं त्रेतायां रौप्यमेव च ।
द्वापुरे त्रपुजं पात्रं कलौ लोहं तु शस्यते ।
ताम्रपैत्तलिकं लोहमौपलश्च द्विजादितः ।
पात्र पाद्यजलायोक्त ताम्रं वा सर्वत्रकम् ॥ इति व्यासः

यजमान के हाथ से अरघा लेकर वर इस मन्त्र को पढ़—

ओं पाद्यं प्रतिगृह्णामि ।

(मैं पैर धोने योग्य जल को लेता हूँ ।)

लड़का अपना पैर आगे करे और खुद जल को डाले और यजमान पैर को धोवे, पैर धोते समय पण्डित[1] इस मन्त्र को पढ़े ।

नोट—ब्राह्मण का[2] पहले दाहिना पैर और फिर बायां, क्षत्री का पहले बायां और फिर दायां धोवे ।

ओं विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः ।

हे जल तुम (विराजः[3]) भगवान् के (दोहः) सार (असि) हो इसलिये (विराजः) भगवान् के सार तुमको (अशीय) मैं ग्रहण करता हूँ (विराजः) भगवान् का (दोहः) सार तू इस समय (मयि) मेरे विषय में (पाद्यायै) चरणों के धोने[4] के योग्य बनो ।

पण्डित अपने हाथ में जल से भरा हुआ अरघा लेकर यह मंत्र पढ़े—

ओं पाद्यं पाद्यं पाद्यम् ।

फिर पंडित जल से भरा हुआ अरघा यजमान को देवे और यजमान उसे पकड़ कर यह कहे—

ओं पाद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

यजमान के हाथ से अरघा लेकर वर इस मन्त्र को कहे—

---

१. मन्त्रोच्चारणकाल एव पादप्रक्षालनं कर्त्तव्यम्, नतु मन्त्रान्ते ।

२. ब्राह्मणो दक्षिणं पादं पूर्वं प्रक्षालयेत् सदा ।
क्षत्रादि प्रथमं सव्यमिति धर्मानुशासनम् ।। इति पद्मपुराणवचनात् ।

३. यतः पुराणेष्वपि विराट् पुरुषशरीरादेव जलोत्पत्तिर्निरूपिता ।
आपो नारा इति प्रोक्ता आपो हि नरसूनवः ।।

४. मच्चरण प्रक्षालनयोग्यं भवेत् ।

ओं पाद्यं प्रतिगृह्णामि।

लड़का अपना पैर आगे करे और खुद जल को डाले। यजमान इस प्रकार दूसरे पैर को धोवे और धोते समय पंडित इस मन्त्र को पढ़े—

ओं विराजो दोहोसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।

फिर पंडित अपने हाथों में दूसरा विष्टर ले इस मंत्र को कहे—

ओं विष्टरो विष्टरो विष्टरः।

पंडित के हाथों से यजमान विष्टर को अपने हाथों में लेकर यह पढ़े—

ओं विष्टरः प्रतिगृह्यताम्।

यजमान के हाथ से विष्टर लेकर वर यह पढ़े—

ओं विष्टरं प्रतिगृह्णामि।

दोनों हाथों से विष्टर को पकड़कर लड़का इस मन्त्र को पढ़े—

वर्ष्मोऽस्मि समानाना मुद्यता मिव सूर्यः।
इमं त मभितिष्ठामि यो मां कश्चाभिदासति।

इस मन्त्र के पढ़ने के बाद उत्तर की तरफ है अग्रभाग जिसका ऐसे विष्टर को पैरों के नीचे रक्खे।

कुशा, चावल, सुपारी, फूल और चन्दन को लेकर अरघे में डालकर और उस अर्घपात्र[1] को अपने हाथ में रखकर पंडित इस मंत्र को पढ़े—

---

१. अर्घशब्देन उदकपात्रं एव। इति कर्काचार्य्यः।
कुशचन्दनपुष्पाणि चाक्षता उदकं तथा।
पयोदधि तथा रुक्ममष्टाङ्गोऽर्घः करग्रहे॥
जलं दधि घृतं क्षीरं बदरीतण्डुलास्तिलाः।
सिद्धार्थकास्तथा दर्भा अर्घोऽष्टांगः प्रकीर्तितः॥
"इति पुराणे ब्रह्मवाक्येनार्घलक्षणमुक्तम्"
कांस्यपात्रं भवेद् विप्रे स्वर्णपात्रं तु भूमिपे।
रौप्यपात्रं भवेद् वैश्ये लोहपात्रं च शूद्रके॥

ओं अर्घो अर्घो अर्घः ।

(यह अर्घ है यह अर्घ है यह अर्घ है ।)

पंडित के हाथ से इस जल पुष्प सहित अरघे को लेकर यजमान इस मन्त्र को कहे—

ओं अर्घः प्रतिगृह्यताम् ।

(आप अर्घ लीजिये ऐसा यजमान वर को कहे)

यजमान के हाथ से अर्घपात्र लेकर वर यह कहे—

ओं अर्घं प्रतिगृह्णामि ।

(मैं अर्घ लेता हूँ ।)

ऐसा कह कर यजमान के हाथ से अर्घपात्र को लेकर वर इस मन्त्र को पढ़े—

ओं आपः स्थ युष्माभिः सर्वान् कामान् अवाप्नवानि ।

हे जल देवता तुम (आपः) दूध, दधि, घी, फलादियों में (स्थ) विद्यमान हो इसलिये मैं (युष्माभिः) तुम्हारे से (सर्वान्) सब (कामान्) कामनाओं को (अवाप्नवानि) पाऊँ ।

वर[1] इस मन्त्र को पढ़े और अर्घपात्र में से कुछ चावल फूल कुशा इत्यादि को अपने सिर पर रख ले ।

वर अर्घपात्र के जल को पूर्व और उत्तर की कोण में छोड़ता हुआ इस मन्त्र को पढ़े—

ओं समुद्रं वः प्रहिणोमिस्वां योनिमभिगच्छत ।
अरिष्टास्माकं वीरा मा परासेचि मत् पयः ॥

---

१. तथा च पराशरः ।
गृहीत्वार्घं वरस्तस्मात् पुष्पं दत्त्वा स्व मूर्द्धनि ।
करयुग्मेन तं भूयो मौलिपर्यन्तमानयेत् ॥

हे जलो (वः) तुम को (समुद्रं) समुद्र की तरफ (प्रहिणोमि) पहुँचाता हूँ, इसलिये (स्वां योनिं) अपने जन्म स्थान समुद्र की तरफ (अभि-गच्छत) जाओ (अस्माकम्) हमारे (वीरा) वीर (अरिष्टा) कष्टों से रहित हों (पयः) और यह मंगल जल (मत्) मुझ से (परासेचि) मत दूर हो ।

पंडित अरघे में जल डालकर अपने हाथ में ले और इस मंत्र को पढ़े—

ओं आचमनीयं आचमनीयं आचमनीयम् ।

(यह आचमन[१] करने योग्य जल है यह आचमन करने योग्य जल है यह आचमन करने योग्य जल है ।)

पंडित जल का अरघा यजमान को देवे और वह इस मंत्र को पढ़े—

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्यताम् ।

(आप आचमन करने योग्य जल को लीजिए)

लड़का अरघे को यजमान से लेकर यह मन्त्र पढ़े—

ओं आचमनीयं प्रतिगृह्णामि ।

(मैं आचमन करने योग्य जल को लेता हूँ ।)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर एक आचमन करे फिर दो बार चुपचाप आचमन करे ।

ओं आमागन् यशसा स ँ सृजवर्चसा तं मा कुरु प्रियं प्रजाना मधिपतिं पशूना मरिष्टं तनूनाम् ।

---

१. उच्छिष्टं मानवं स्पृष्ट्वा भोज्यं चापि तथा विधम् ।
हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य आचमनेन स शुध्यति ।।
माषमात्रसुवर्णस्य यत्र मज्जति वै मणिः ।
एतदाचमनं प्रोक्तं पवित्रं कायशोधनम् ।।
पूताभिः प्रकृतिस्थाभिर्हीनाभिः फेनबुद्बुदैः ।
त्रिवारमद्भिराचामेद् द्विजादिः शुद्धिहेतवे ।। (इत्याचार चंद्रोदये)
अद्भिस्तु प्रकृतिस्थाभिर्हीनाभिः फेनबुद्बुदैः ।
हृत्कण्ठतालुगाभिस्तु यथासंख्यं द्विजातयः ।

हे जलेश (मा) मुझ को (यशसा) यश से (आमागन्[1]) युक्त करो (वर्च्चसा) ब्रह्मतेज से (संसृज) युक्त करो (प्रजानाम्) पुत्र पौत्रादिकों का (प्रियम्) प्रेमपात्र (कुरु) करो (पशूनाम्) पशुओं का (अधिपतिम्) स्वामी करो (तनूनाम्) शरीरधारियों को (अरिष्टम्) रोग रहित करो।

पंडित कांसी के बर्तन में शहद,[2] दही और घी को डालकर ऊपर कांसी के बरतन से ढक दे और इस मन्त्र को पढ़े—

ओं मधुपर्कों मधुपर्कों मधुपर्कः।

(यह मधुपर्क है यह मधुपर्क है यह मधुपर्क है।)

यजमान मधुपर्क के पात्र को पंडित के हाथ से लेकर इस मंत्र को पढ़े—

ओं मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्।

(आप मधुपर्क लीजिये।)

वर यजमान के मान के लिये इस मन्त्र को कहता है।

ओं मधुपर्कं प्रतिगृह्णामि।

(मैं मधुपर्क ग्रहण करता हूँ।)

इस मन्त्र से यजमान के हाथ से मधुपर्क लेवे नहीं, क्योंकि अगले मंत्र में यजमान के ही हाथ में मधुपर्क[3] देखना लिखा है इसलिए यजमान मधुपर्क

---

१. आङ्पूर्वो गम्लृगतौ इति धातुस्तस्यरुपम्।
आमेत्यव्ययं सहार्थे॥

२. पलमेकं घृतं चैव द्विपलं दधि प्रोच्येते।
पलमेकं मधुकुर्यान् मधुपर्कविधिःस्मृतः॥
दध्यलामे पयो ग्राह्यं मध्वलाभे तु शर्करा।

३. स्मृतिसारमहार्णव प्रभृतिषु यद् उक्तम्—
रोमभिस्तु भवेत् कुष्टी मक्षिकाभिर्दरिद्रिता।
कीटकैश्च भवेदन्धस्तदर्थं हि निरीक्षणम्॥
गवां दुग्धे तु रोमाणि घृतमध्ये तु मक्षिकाः।
मधौ च कीटकाः स्युर्वै तदर्थं हि निरीक्षणम्॥
मधुपर्कनिरीक्षणेऽदृष्टमपिफलम्—
पुंभिश्च यत्कृतं पापं बाल्ययौवनवार्द्धके।
तत्सर्वं नाशयेत् पापं मधुपर्कोऽवेक्षणात्॥

के ढकने को उतार दे और वर से कहे कि आप इसे देखिये । वर दाता के हाथ में ही इस मधुपर्क को देखे और इस मन्त्र को पढ़े—

ओं मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे ।

हे मधुपर्क ! मैं (त्वा) तुझको (मित्रस्य) सूर्य के अथवा मित्र के (चक्षुषा) नेत्रों से (प्रतीक्षे) देखता हूँ ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर मधुपर्क को दोनों हाथों से लेवे और बाएँ हाथ पर रक्खे—

ओं देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ।

हे मधुपर्क (त्वा) तुमको (सवितुः) सूर्यनारायण की (प्रसवे) आज्ञा से (अश्विनोः) अश्विनी कुमारों की (बाहुभ्याम्) भुजाओं से (पूष्णः) आदित्य के (हस्ताभ्याम्) हाथों से (प्रतिगृह्णामि) में ग्रहण करता हूँ ।

इस मन्त्र को पढ़कर अनामिका (छोटी अंगुली के साथ की अंगुली) से तीन बार आलोडन करे (अनामिका को ३ बार फेर कर उसे एकरस करे) और अनामिका और अंगुष्ठ से पृथ्वी पर तीन बार गेरे और गेरते समय तीन बार ही इस मन्त्र को पढ़े—

ओं नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि ।

हे जठराग्ने (श्याव) काले पीले (आस्याय) मुखावली जो तू है (ते) तेरे लिये (नमः) नमस्कार है (ते) तुम्हारे (अन्नशने) खाने योग्य मधुपर्क में (यत्) जो (आविद्धम्) निषिद्ध है (तत्) उसको (निष्कृन्तामि) मैं निकालता हूँ ।

इस मन्त्र को पढ़कर यजमान से तीन बार दिए हुए मधुपर्क को वर खाये और प्रत्येक बार इस मन्त्र को पढ़े—

ओं यन्मधुनो मधव्यं परम ँ रूप मन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि ।

हे देवताओ (मधुनः)शहद का (यत्) जो (रूपम्) रूप है वह (मधव्यम्(मीठा है (परम्) उत्तम है (अन्नाद्यम्) अन्न की तरह खाने योग्य है (अहम्) में (तेन) उस (मधुनः) शहद का जो कि (मधव्येन) मीठा (परमेण) उत्ताम (रूपेण) रूप वाला (अन्नाद्येन) अन्न की तरह खाने योग्य (परमः) पवित्र और (मधव्यः) मधुपर्क[1] के योग्य है (अन्नादः) उस उत्तम अन्न का भोक्ता (असानि) बनूं ।

बचा हुआ मधुपर्क पृथ्वी में जहां पाद न आवें वहां गेर देवे इसके बाद कुरला और फिर आचमन करे और इस मन्त्र को पढ़कर दाएँ हाथ की लम्बी तीन उँगलियों से वर मुख का स्पर्श करे ।

ओं वाङ् मे आस्येऽस्तु ।

(मे) मेरे (आस्ये) मुख में (वाक्) वाणी (अस्तु) हो इस मन्त्र को पढ़कर वर तर्जनी और अंगुष्ठ से नासिका स्पर्श करे ।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।

(मे) मेरी (नसोः) नासिका में (प्राण[2]) श्वास (अस्तु) हो ।

---

१. मधुपर्के च सोमे च अप्सु प्राणाहुतिषु च ।
दन्तलग्ने इक्षुलग्ने नोच्छिष्टो भवति द्विजः ।
ताम्बूलेक्षुफले चैव भुक्तस्नेहानुलेपने ।
मधुपर्के च सोमे च नोच्छिष्टं मनुरब्रवीत् ।।
पुत्रायान्तेवासिने वोत्तरासीनायोच्छिष्टं दद्यात् सर्वं वा,
प्राश्नीयात् प्राग् वा संचरे निनयेत् । इति सूत्राणि ।
आचार्यः शिष्याय ऋत्विक् प्रियपुत्राय वरतातौ सर्वं ।
प्राश्नीयतां राजा संचरेदेशे पूर्वस्यां दिशि निनयेत् ।। इति जयरामः ।

२. हृदि प्राणो गुदेऽपानः समानो नाभिमण्डले ।
उदानः कण्ठदेशे स्याद् व्यानः सर्वशरीरगः ।। सिद्धान्तचन्द्रोदये ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर मध्यमा और अंगुष्ठ से नेत्रों का स्पर्श करे–

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।

(मे) मेरे (अक्ष्णोः) नेत्रों में (चक्षुः) देखने की शक्ति (अस्तु) हो ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर अनामिका और अंगुष्ठ से कर्णों का स्पर्श करे—

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।

(मे) मेरे (कर्णयोः) कानों में (श्रोत्रम्) सुनने की शक्ति (अस्तु) हो ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर कनिष्टका और अंगुष्ठ से भुजाओं का स्पर्श करे–

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ।

(मे) मेरी (बाह्वोः) भुजाओं में (बलम्) ताकत (अस्तु) हो ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर सारी अंगुलियां मिलाकर दोनों जंघाओं का स्पर्श करे–

ओं ऊर्वोर्मे ओजोस्तु ।

(मे) मेरी (ऊर्वोः) जंघाओं में (ओजः) ताकत (अस्तु) हो ।

इस मन्त्र को पढ़कर वर दोंनों हाथों से सिर से लेकर पैर तक स्पर्श करे—

ओं अरिष्टानि मे अङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।

(मे) मेरे (तनूस्तन्वा) शरीर के (अङ्गानि) समस्त अङ्ग (सह) एक बार ही (मे) मेरे लिये (अरिष्टानि) रोग रहित (सन्तु) हों ।

यजमान इस मन्त्र को कहे—

ओं गौर्गौर्गौः ।

(गौ है गौ है गौ है ।)

वर और यजमान दोनों दो कुशाओं की सरियों को एक तरफ से यजमान पकड़े और दूसरी तरफ से वर और फिर वर इस मन्त्र को पढ़ें–

ओं माता रुद्राणां दुहिता वसूना ७ं स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः । प्रणवोचं चिकितुषे जनाय मा गा मनागामदितिं वधिष्ट मम[1] चामुष्य[2] पाप्मा हतः ॥

हे गोमाता आप (रुद्राणाम्) ग्यारह रुद्रों की (माता) माता हो (वसूनां) आठ वसुओं की (दुहिता) लड़की हो (आदित्यानां) बारह आदित्यों की (स्वसा) बहन हो (अमृतस्य नाभिः) आपकी नाभि में अमृत है इसलिए मैं (चिकितुषे) ज्ञान वाले (जनाय) यजमान के लिए (प्रणवोचं) कहता हूँ कि मेरी प्रसन्नता के लिए आप (अनागाम्) अपराध से रहित (अदितिं) न मारने योग्य (गाम्) गौ को (मा) मत (वधिष्ट) मारो (च) और यह गौ (मम) मेरे (च) और (अमुष्य) उस यजमान के (पाप्मा) संपूर्ण पापों को (हतः) दूर करे ।

इस मंत्र को ऊंचे स्वर से पढ़कर यजमान और वर ने जो कुशा पकड़ी है उसको पृथ्वी पर रख दे—

ओं उत्सृजत तृणानि अत्तु ।

(उत्सृजत) छोड़ता हूं (तृणानि) घास को (अत्तु) खाओ ।

१—(वर का नाम) शर्मणः / वर्मणः—गुप्तस्य वरस्य ।

२—(यजमान का नाम) शर्मणः / वर्मणः—गुप्तस्य यजमानस्य उभयोः ।

अस्मिन् मन्त्रे केचित् गवालम्भनं कथयन्ति परन्तु कलियुगे एतत् न, तथाहि—
न परंप.तकं घोरं कलौ गोहत्यया समम् । इति मनुः

गोमेधो नरमेधश्च विवाहे गोर्वधस्तथा ।
परक्षेत्रे सुतोत्पत्तिः कलावेतानि वर्जयेत् ॥ इति पराशरः

अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्म्यमप्याचरेन्न तु । इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ ।
अश्वालम्भं गवालम्भं सन्यासं पलपैतृकम् ।

देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥

ततो वेदिकायां तुषकेशशर्करादि रहितायां हस्तमात्रपरिमितायां[1] चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमुह्य[2] तान् कुशान् ऐशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेन[3] उपलिप्य स्रुवेण स्फेन वा प्रागग्रप्रादेशमात्रमुत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिख्य[4] उल्लेखन क्रमेण अना-

---

१—नित्यं नैमित्तिकं काम्यं स्थण्डिले वा समाचरेत् ।
हस्तमात्रेण तत् कुर्याद् बालुकाभिः सुशोभनम् ।। शारदातिलके

२—त्रिभिर्दर्भैर्महाराज पांसूनामपसारणम् ।
परिसमूहनं चैव विज्ञेयं कर्मकोविदैः ।। इति व्यासवचनम्
कृमिकीटपतंगाद्या भ्रमन्ति वसुधातले ।
तेषां संरक्षणार्थाय कुर्यात् परिसमूहनम् । कुशकण्डिकाभाष्ये

३—वरुणो देवता मूत्रे गोमये हव्यवाहनः ।
सोमः क्षीरे दध्निवायुर्घृतेरवि रुदाहृतः ।।
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ।
एकमेकं पावनीयं मांगल्ये शुभकर्मणि ।। इति देवलः
अत्यन्तजीर्णदेहाया वन्ध्यायाश्च विशेषतः ।
रोगार्त्तनवसूताया न गोमयमुपाहरेत् ।। इति धर्मशास्त्रवचनम् ।
पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रोमहासुरः ।
मेदसा व्यापिता भूमिस्तदर्थमुपलेपनम् ।। इति कुशकण्डिकाभाष्ये ।।
जलाशयादन्त्यजाद्यैः कारितादस्थिचर्मभिः ।
कृमिकीटादिभिर्दुष्टान् नैवोदक मुपाहरेत् ।।
कृमिहीनं सुवर्णस्थं मलमूत्राद्यदूषितम् ।
सुस्वादु शुद्ध संस्थानादुदकन्तु समाहरेत् ।।
कूपात् प्रस्रवणात् खातात् सरसो देवप्रग्रहात् ।
नद्यादि संगसात्तीर्था दुदकं समुपाहरेत् ।।

४—स्वर्गमर्त्यपातालाश्च त्रिषु रेखासु संस्थितः ।
वैश्वानरः स्थितो यत्र होमे तत्र समागताः ।।
अंगुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तोऽनामिका धनदायिनी ।
द्वाभ्यां समुद्धृता रेखाः शुभदा वरकन्योः ।।

मिकाङ्गुष्ठाभ्यां उद्धृत्य जलेन अभ्युदय तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रस्थवह्निं प्रत्यङ्मुखं समाधाय तद् रक्षणार्थं कंचिन् नियुज्य कौतुकागाराद् मातुलः कन्यामानीय मण्डपे कन्या द्वैमातुरोंकारलक्ष्मी कुबेरान् अर्चयेत् ॥

इसके बाद तुष केश कंकरादि से रहित एक हाथ लम्बी चौड़ी वेदी में चौकोन भूमि को कुशाग्रों से साफ कर उन कुशाग्रों को पूर्वोत्तर कोण में फेंककर गोबर और जल से लीपकर स्रुव या खंडाकारदण्ड से पूर्व की तरफ है अग्रभाग जिसका ऐसा प्रादेशमात्र (पसारे हुए अंगुष्ठ और तर्जनी के दरमियान लम्बाई को प्रादेश कहते हैं) दक्षिण से उत्तर की तरफ तीन रेखाओं को लिखकर लिखने के क्रम से अनामिका और अंगुष्ठ दोनों से मिट्टी को ऊपर उछाल कर जल छिड़क कर चुपचाप कांसी के बर्तन में अग्नि रखकर पश्चिमाभिमुख अग्नि को स्थापन कर उसकी रक्षा के लिए किसी को खड़ा करके मातुल[1] कौतुकागार से कन्या को लाकर बिठलावे मण्डप में कन्या गणेश ओंकार लक्ष्मी और कुबेर का पूजन करे।

तब यजमान वर के लिए चार वस्त्र देता है। धोती, तौलिया और दो मौली की तन्दे। वर उनमें से एक मौली के तन्द को लेकर इस मन्त्र को पढ़ता हुआ कन्या को अधोवस्त्र दे अर्थात् मौली की एक तंद उसके दाहिने जानु (घुटने) पर रख दे।

ओं जरां गच्छ परिधत्स्ववासो भवाऽऽकृष्टीनामभिशस्तिपावा। शतं च जीवशरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः॥

१—कौतुकागारात् कन्याऽऽनयनं वरकर्तृकं शास्त्रेण विधीयते परं पञ्चनद प्रदेशे तु मातुलः काचित् सौभाग्यवती वा स्त्री कौतुकागाराद् कन्यामानयति।

हे कन्ये ! तू (जराम्) निर्दोष वृद्धावस्था को मेरे साथ (गच्छ) प्राप्त हो और मेरे दिये हुए (वासः) वस्त्र को (परिधत्स्व) पहन (आकृष्टीनाम्)[1] कामादिकों से खैंचे हुए मनुष्यों के बीच में (वा) यकीनन (अभिशस्तिपाः) प्रमाद से अपने आपकी रक्षा करने वाली (भव) हो (च) और (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतु तक (जीव) प्राण धारण कर और (सुवर्चा) तेजवाली होकर (रयिम्) धन को (च) और (पुत्रान्) पुत्रों को (अनुसंव्ययस्व) पैदा कर और (आयुष्मति) हे आयुष्मति ! सम्पूर्ण आयु वाली (इदं) इस (वासः) कपड़े को (परिधत्स्व) पहन ।

वर दूसरी मौली की तंद को लेकर इस मंत्र को पढ़ता हुआ कन्या को उत्तरीयवस्त्र दे अर्थात् मौली की दूसरी तंद उसके दाहिने कन्धे पर रख दे ।

ओं या अकृन्तन् नवयन् या अतन्वत याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ तास्त्वा देवीर्जरसे संव्ययस्वाऽऽयुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ।

हे कन्ये ! (या) जिन (देवीः) देवियों ने (इदं) इस (वासः) वस्त्र को (अकृन्तन्) काता है (या) जिन्होंने (अवयवन्) तना है और (या) जिन्होंने (तन्तून्) सूत को (अतन्वत) फैलाया है (च) और जिन्होंने (अभितः) दोनों तरफ से (तन्तून्) सूत को (ततन्य) ओत प्रोत किया है अर्थात तुरीवेमा से बुना है (ताः) और इन सब कामों को करने वाली देवियां (त्वा) तुमको (जरसे) वृद्धावस्था तक जीने के लिये (संव्ययस्व) वस्त्र पहनावें इसलिये (आयुष्मति) हे आयुष्मति ! (इदम्) इस (वासः) वस्त्र को (परिधत्स्व) धारण कर । (वर धोती को लेकर अगले मंत्र को पढ़ता हुआ उसे अपने दाहिने जानु (गोडे) पर रखे) ।

१—आकृष्टीनाम इति प्रथमार्थे षष्ठी आकृष्टी भव मनोहरा भव ।

२—सदशं नूतनं वस्त्रं मंजिष्ठादि सुरंजितम् ।
अहतं तद् विजानीयादित्युक्तं पूर्वसूरिभिः ॥
ईषद् धौतं नवं श्वेतं सदशं यन्न धारितम् ।
अहतं तद् विजानीयात् सर्वकर्मसु पावनम् ॥
अधौतवस्त्रो यः कुर्यान्नित्यनैमित्तिकीं क्रियाम् ।
न क्रियाफलमाप्नोति वृथा तस्य परिश्रमः ॥

ओं परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुष्ट्वाय जरदष्टिरस्मि शतं च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये ।

हे वस्त्र के अधिष्ठातृ देवता (परिधास्यै) अनेक प्रकार के सुन्दर तथा शुभ वस्त्र धारण करने के लिये (यशोधास्यै) यश और कीर्ति के लिये (च) और (दीर्घायुष्ट्वाय) बहुत देर तक दोषरहित जीने के लिये मैं इस वस्त्र को (अभिसंव्ययिष्ये) धारण करता हूँ मैं कैसा हूँ वस्त्र अधिष्ठातृ देवता की कृपा से (जरदष्टिः) पूर्णायु वाला (अस्मि) हूँ फिर कैसा हूं (पुरुची) बहुत पुत्र धनों वाला हूं । वस्त्र कैसा है (रायपोषम्) धनकी पुष्टि करने वाला है । इस वस्त्र के सम्बन्ध से मैं (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतुओं तक (जीवामि) जीता रहूं ।

वर तौलिये को लेकर अगले मंत्र को पढ़ता हुआ उसे अपने दाहिने कन्धे पर रखे।

**ओं यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती ।
यशो भगश्च माऽविन्दत् यशो मा प्रतिपद्यताम् ।।**

हे वस्त्र के देवता (यशसा) यश वाले (द्यावापृथिवी) आकाश और पृथिवी (मा) मुझ को (अविन्दत्)[1] प्राप्त होवें (यशसा) यशवाले (इन्द्राबृहस्पती) इन्द्र और बृहस्पति (मा) मुझ को प्राप्त होवें (च) और (यशः) यशवाला (भगः) सूर्य्य (मा) मुझको (प्रतिपद्यताम्) प्राप्त हो ।

वस्त्र धारण करने के बाद वर और कन्या[2] दो दो आचमन करें । आचमन के बाद यजमान वर और कन्या को कहे कि तुम दोनों आपस में देखो

१—विभक्तिवचनव्यत्ययेनान्वयः । (अत्र खण्डान्वयः)

२—दशवर्षा भवेत् कन्या सम्प्रदाने वधूर्भवेत् ।
सांगुष्टग्रहणे भार्या पत्नी चातुर्थकर्मणि ।। नारदवचनम् ।

यजमान के ऐसा करने पर वर और कन्या आपस में देखें और वर इस मन्त्र को पढ़े—

ओं समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।

हे कन्ये (विश्वेदेवा:) सम्पूर्ण देवता तथा (समाप:) शुद्धजल (नौ) हम दोनों के (हृदयानि) हृदयों को (समंजन्तु) शुद्ध करे तथा (संमातरिश्वा) शुद्ध वायु तथा (संधाता) अनुकूल ब्रह्मा और (समुदेष्ट्री) गायत्री (नौ) हम दोनों के हृदयों में (दधातु) धर्म अर्थ काम और मोक्ष को स्थित करें।

(१) (पुरोहित कन्या के वस्त्र से वर के वस्त्र के साथ ग्रन्थिवंधन करे)

नोट—कई कई जातियों में पुरोहित लम्बी मौली को लेकर उसे यज्ञोपवीत की तरह वर के गले में डाल देते हैं और उस मौली के साथ कन्या के वस्त्र का ग्रन्थिबन्धन करते हैं और कई २ जातियों में १४ छुहारे और जुट्ट को कन्या की दाई कन्नी में बांध देते हैं और उस बँधे हुए जुट्ट छुहारों की पोटली से यज्ञोपवीत के सदृश वर के गले में पड़े मौली से ग्रन्थिबन्धन करते हैं। पुरोहित दो मौली की तन्दे कंकण बन्धन के लिये यजमान को दे। यजमान दो मौली की तन्दों को ले उनमें से एक तन्द को पहले कन्या के दाएं हाथ में नाले की गांठ के समान बांधे फिर दूसरी तन्द वर के दाएं हाथ में नाले की गांठ के समान बांधे।

१—पिता तु प्रेषणेनैव सम्मुखीकरणञ्चरेत्।
मन्त्रलिंगात्तु मन्त्रस्तु पठनीयो वरेण च ॥ सुमन्तुवचनम्
स्नात्वा पीत्वा क्षुते सुप्ते भुक्त्वारथ्योपसर्पणे।
आचान्तः पुनराचामेत् वासः परिधाय च ॥ योगियाज्ञवल्क्यः

२—पश्चनददेशे प्रायो यजमानापेक्षया पुरोहितेनाचार्येण वा ग्रन्थिबन्धनं क्रियते ॥

३—कन्यकासुदशे पार्श्वे द्रव्यपुष्पाक्षतानि च।
निक्षिप्यतानि संबद्धवा वरवस्त्रेण संयुजेत् ॥
योगियाज्ञवल्क्यः।

नोट—(२) इन कंकणों को खोलते समय पहले वर का कंकर्ण[1] खोलना फिर कन्या का ।

गोत्रोच्चारणम्

पुरोहित दो आटे के पेड़े बनाले एक पेड़े में दक्षिणा रख कर दूसरा पेड़ा उसके ऊपर धरे इस संपुट को लड़की के दाहिने हाथ पर रख दे और लड़की के बाएं हाथ से उसे ढक दें फिर लड़के का दायां हाथ नीचे और बायाँ ऊपर यानी लड़की के दोनों हाथ लड़के के हाथों के बीच हों और ऊपर मौली आदि लपेट दे फिर इसके बाद वर का पुरोहित गोत्रोच्चारण करे ।

करारविन्देन पदारबिन्दं,
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्यपत्रस्य पुटे शयानं,
बालं मुकुन्दं सततं स्मरामि ॥

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्य कात्यायन सुत्रिण: माध्यन्दिनी शाखिन: यजुर्वेदिन: (लड़के के पड़दादा का नाम)

शर्मण:[4]
——— प्रपौत्राय[3]
वर्मण:—गुप्तस्य

१—कन्यापूर्वे बन्धनं कंकणस्य वरं पूर्वं मोचनं सम्प्रदिष्टम् ।
कर्मादौ बन्धनं प्रोक्तं कर्मान्ते तद् विसर्जनम् ॥
पुमान् बध्नाति मन्त्रेण यदा वै दक्षिणे करे ।
वामे करे तदा प्रोक्तं स्त्रीणामपि बन्धनम् (विधानपारिजाते)
रक्षार्थं दक्षिणे हस्ते बध्नीयात् कंकणे तयो: । लघ्वाश्वलायने स्मृतिवचनम्

२—वर गोत्रं समुच्चार्य्य प्रपितामहपूर्वकम् ।
नामसंकीर्तयेत् विद्वान् कन्यायाश्चैवमेवहि ॥ ऋष्यश्रृंगवचनम् ।

३—शर्मान्तं ब्राह्मणस्योक्तं वर्म्मान्तं क्षत्रियस्यतु ।
गुप्तान्तं चैव वैश्यस्य दासान्त: शूद्र एव हि ॥

४—उच्चार: प्रातिलोम्येन पितृणां सर्वकर्मसु ।
कन्यादाने यज्ञवृताऽनुलोम्येन सस्मृत: ॥ (कारिकाकार:)

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रामाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांछित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः

हनुमन्नाटके

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य कात्यायन सूत्रिणः माध्यन्दिनी शाखिनः यजुर्वेदिनः (लड़के के दादा का नाम)

शर्मणः
———पौत्राय।
वर्मणः—गुप्तस्य

यस्यालीयत शल्कसीम्नि जलधिः,पृष्ठे जगन्मण्डलं।
दंष्ट्रायां धरणी, नखे दितिसुताधीशः पदे रोदसी॥
क्रोधे क्षत्रगणः शरे दशमुखः पाणौ प्रलम्बासुरः।
ध्याने विश्वमसावधार्मिककुलं कस्मैचिदस्मै नमः॥

साहित्यदर्पणे।

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्य कात्यायन सूत्रिणः माध्यन्दिनी शाखिनः यजुर्वेदिनः (लड़के के पिता नाम)

शर्मणः
———पुत्राय
वर्मणः—गुप्तस्य

लड़के का पुरोहित गोत्रोच्चारण के समाप्त होने पर चावल पुष्प इत्यादि को लेकर वर और कन्या के हाथों पर फेंके और इन शब्दों को कहे।

कन्या सौभाग्यवती भवतु, दीर्घायुर्भवतु वरः।

यजमान (कन्या पक्ष) का पुरोहित गोत्रोच्चारण करे—

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,

या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा॥

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य कात्यायन सूत्रिण: माध्यन्दिनीशाखिन: यजुर्वेदिन:—(लड़की के पड़दादा का नाम)

शर्मण: / वर्मण:—गुप्तस्य प्रपौत्रीम्

रक्तां रक्ताम्बरां रक्तगन्धमाल्यविभूषिताम्!
चतुर्भुजां त्रिनयनां माणिक्यमुकुटोज्ज्वलाम्॥
पाशांकुशाविक्षुचापदाडिमीपुष्पसायकान्।
दधानां बाहुभिर्नेत्रैर्दर्पणामोदशीतलैः॥

(मेरूतन्त्रेवज्रेश्वरीध्यानम्)

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य कात्यायन सूत्रिण: मध्यन्दिनी शाखिन: यजुर्वेदिन: (लड़की के दादा का नाम) शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य पौत्रीम्।

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
वगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्त्तिताः॥

(मुण्डमालातन्त्रे)

किं गोत्रस्य (गोत्र का नाम) गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य कात्यायन सूत्रिण: माध्यन्दिनी शाखिन: यजुर्वेदिन: (लड़की के पिता का नाम)--

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य पुत्रीम्

यजमान का पुरोहित गोत्रोच्चारण के समाप्त होने पर चावल पुष्प इत्यादि को लेकर वर और कन्या के हाथों पर फैंके और इन शब्दों को पढ़े—

कन्या सौभाग्यवती भवतु। दीर्घायुर्भवतु वरः।

इसके बाद उनके हाथों से वह पेड़े ले ले, इस विधि को पंजाबी में "हथ लेवें" और संस्कृत में "हस्तबन्ध" कहते हैं।

इस मन्त्र को यजमान पढ़ें—

दाताहं वरुणो राजा द्रव्यमादित्यदैवतम्।
वरोसौ विष्णुरूपेण प्रतिगृह्णात्वयं विधिः॥
रुद्ररूपेण

(अहम्) मैं (दाता) यजमान (वरुणः) वरुण (राजा) राजा हूँ और (द्रव्यम्) देने योग्य कन्या का (आदित्यदैवतम्) आदित्य देवता है। (विष्णुरूपेण, रुद्ररूपेण)[1] विष्णुरूप या रुद्ररूप (असौ) यह (वरः) वर (प्रतिगृह्णातु) ग्रहण करे (अयम्) यह (विधिः) विधान है।

—:o:—

कन्यादानम्

दाता शंख में जल, कुशा, चावल, सुपारी, पुष्प, चन्दन की लकड़ी को डालकर और उस शंख को अरघे या किसी और डोने आदि में रखकर कन्या के हाथ को शंख के साथ जोड़े और फिर पण्डित कन्या दान का संकल्प पढ़े।

नोट—कन्यादान के समय यजमान के दक्षिण की ओर स्त्री हो।

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः तत् सदद्य मासोत्तमे

---

१. अत्र केचिदाहुः—ब्राह्मणजातीयो वरो विष्णुरूपः क्षत्रियश्च रुद्ररूपः, तन्न युक्तियुक्तमाभाति, वैश्यजातीयवरप्रयोजकशब्दाभावात्, केवलमत्र वरस्य शैवी दीक्षा किंवा वैष्णवी इत्येवार्थोऽभिप्रेतः।

मासे (महिने का नाम)' मासे (पक्ष का नाम) पक्षे शुभतिथौ (तिथि का नाम) यथायोगकरणमुहूर्तनक्षत्रोपेतायां (वार का नाम) वासरान्वितायां (गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नः सपत्निकोऽहं ।

१—पिता पितामहो भ्राता सकुल्यो जननी तथा ।
कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थः परः परः ॥
अप्रयच्छन् समाप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ ।
गम्यं त्व भावे दातॄणां कन्या कुर्यात् स्वयंवरम् ॥ इति याज्ञवल्क्यस्मृतौ

मास पक्षतिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः ।
उल्लेखनमकुर्वाणो न तस्य फलभाग्वेत् ॥ हेमाद्रौ

कन्यादानसमारम्भे दाताशंखे समाददेत् ।
दूर्वाक्षफलं पुष्पं चन्दनं जलमेव च ॥ बृहत्पराशरः

कन्यादानात् परं दानं न भूतं न भविष्यति । इतिवचनात्

अश्वमेधः क्रतुवरो यथा यज्ञेषु चोत्तमः ।
एवं सर्वेषु दानेषु कन्यादानं प्रशस्यते ॥ इति गौतमः

अद्भिरेव द्विजाग्राणां कन्यादानं प्रशस्यते ।
इतरेषान्तु वर्णानामितरेतरकाम्यया ॥ मनुः

विनादर्भैश्च यत्स्नानं यच्च दानं विनोदकम् ।
असंख्यातश्च यज्जपं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ अङ्गिराः

ननु—समस्तं दानादिकृत्यजातं दिवसेऽनुष्ठीयते, किमिति कन्यादानं रात्राविति चेच्छृणु-कन्यादानस्य रात्रावपि निर्दुष्टत्वात् तथा चात्र मनुर्भगवानाचष्टे—

"ग्रहणोद्वाह संक्रान्तिर्यात्रार्ति प्रसवेषु ।
स्नानदानादिकं कार्यं रात्रावपि न दुष्यति ॥

१—लड़के का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के पड़दादे का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **प्रपौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के दादा का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्त प्रवरस्य** (लड़के के बाप का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पुत्राय**

२—लड़की का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्यप्रवरस्य** (लड़की के पड़दादा का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **प्रपौत्रीम्**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के दादा का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पौत्रीम्**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के पिता का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पुत्रीम्**

३—लड़के का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के पड़दादे का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **प्रपौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के दादा का नाम) ।

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के वाप का नाम

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पुत्राय**

४—लड़की का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के पड़दादे का नाम) ।

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **प्रपौत्रीम्**

गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के दादा का नाम)

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पौत्रीम्**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के बाप का नाम) ।

शर्मण: / वर्मण:-गुप्तस्य **पुत्रीम्**

५—लड़के का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के पड़दादा का नाम)।

शर्मणः / वर्मणः-गुप्तस्य **प्रपौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के दादा का नाम)।

शर्मणः / वर्मणः-गुप्तस्य **पौत्राय**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़के के बाप का नाम)

शर्मणः / वर्मणः-गुप्तस्य **पुत्राय**

६—लड़की का पुरोहित पढ़े—

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के पड़दादे का नाम)।

शर्मणः / वमंणः-गुप्तस्य **प्रपौत्रीम्**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के दादे का नाम)

शर्मणः / वर्मणः-गुप्तस्य **पौत्रीम्**

(गोत्र का नाम) **गोत्रस्य यथोक्तप्रवरस्य** (लड़की के बाप का नाम)।

शर्मणः / वमणः-गुप्तस्य **पुत्रीम्**

मम समस्तपितणां च समस्त-पापक्षय-पूर्वक-कल्पकोटि-शतावधि-निरतिशय-सानन्द-ब्रह्मलोक-महीयमानादि-यावज्जीव-पुत्रपौत्रादि सकलकुटुम्ब-सहितात्मीय-कलेवरानामय-दीर्घायुष्ययुक्त- धनधा-न्यसमृद्धि विशिष्ट-बहुतरसुखभोगावाप्त्यनंतशतसह-स्रशोऽश्वमेध-राजसूय-ग्रहमेध-ज्योतिष्टोमाग्निष्टो-मादियाग कोटिशोः दशगुणोत्तर-धेन्वऽनडुद्यान-रथ वाजिसर्वसस्यसंपूर्ण-सर्वरत्नोपशोभित-सर्वपृथ्वीदान-जन्य-समपुण्यप्राप्त्युत्तरैततकन्याशरीरावस्थित-रोमसमसंख्ययुगसहस्रावच्छिन्न-परमानन्दभोगा-स्पदावाप्तिसहितत्रिदिव वासोत्तर कल्पकोटि शता-वलीढश्रीविष्णुलोकवासकामनया अनेन वरेण अस्यां कन्यायाम् उत्पादयिष्यमाणसंतत्या द्वादशा-वरान् द्वादशपरान् पुरुषान् पवित्रीकर्तुम् आत्मनश्च श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीतये च (लड़की के गोत्र का नाम)

प्रपितामहं समारभ्य गोत्र प्रवरादि संयुतम् ।
कुलसम्बन्धकरणं त्रिस्त्रिर्वारमुदीरणम् ॥
सम्बन्धानामु सर्वेषां योनिसम्बन्ध मुत्तमम् ।
अन्यत् क्रोधेन नश्येत् इदं तु न विनश्यति ॥ भृगुवचनम

गोत्रां यथोक्तप्रवरां (लड़की का नाम) **नाम्नीम् इमां कन्यां सुस्नातां यथाशक्त्यलंकृतां गन्धाद्यर्च्चितां वस्त्रयुगाच्छन्नां प्रजापतिदेवतां** (लड़के के गोत्र का नाम) **गोत्राय यथोक्त प्रवराय माध्यन्दिनीशाखाध्यायिने** (लड़के का नाम)

शमणे विष्णुरूपिणे ब्राह्मणाय वराय / वमणे रुद्ररूपिणे बाहुजाय वराय **पत्नित्वेन तुभ्यमहं संप्रददे ।**

कन्या दान के संकल्प के बाद यजमान शंखी जल सहित कन्या के दाएं अंगुष्ठ को वर के दाएं हाथ में देवे । वर उसी समय कहे—

ओं स्वस्ति ।

वर इस मन्त्र को पढ़ता हुआ कन्या के हाथ को ग्रहण करे—

ओं द्यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु ।

कोई २ जातियें यहाँ पर हस्त लेपन भी करती हैं अर्थात् कन्या के हाथों पर हल्दी से लेप करती हैं ।

(द्यौः) आकाशरूप पिता (त्वा) तुम्हें (ददातु) देवे (पृथिवी) पृथिवी रूप वर (त्वा) तुम्हें (प्रतिगृह्णातु) ग्रहण करे ।

कन्या दान की दक्षिणा[2] के लिये यजमान स्वर्ण[3] की मुन्दरी को अरघे में डाले और पण्डित इस संकल्प को पढ़े—

ओं अद्य कृतैतत् कन्यादान-प्रतिष्ठार्थ-मिदं

१—ऊहः खल्वपि—न सैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेद मन्त्रा निगदिताः ।
ते चावश्यं यज्ञगतेन पुरुषेण यथायथं विपरिणमयितव्याः । महाभाष्यम्

दशाब्दसप्तमासाः त्रिदिनाधिक यदा भवेत् ।
कन्यानामान्तरं धृत्वा चोद्वाहमुपकल्पयेत् ॥

२—हतं यज्ञमदक्षिणम् ।

३—वेदोपनिषदे चैव सर्वकर्मसु दक्षिणा । सर्वत्र तु मयोद्दिष्टा भूमिर्गावोऽथ कांचनम् ।

बैजवापः—शिवनेत्रोद् भवं यस्माद्रजतं पितृवल्लभम् ।
अमंगलं तद् यत्नेन देवकार्येषु वर्जयेत् ॥
गोमिथुन वा दद्यत् ।

स्वर्णाङ्गुलीयक-मग्निदैवतं (लड़के के गोत्र का नाम) **गोत्राय यथोक्त-प्रवराय** (लड़के का नाम) शर्मणे / वर्मणे-गुप्तस्य **वराय दक्षिणा तुभ्यमहं संप्रददे ।** यह सोने की अंगूठी लड़के को देवे, लड़का इसे लेकर **ओं स्वस्ति** यह कहे और अपने दाएं हाथ की छोटी अंगुली के साथ की अंगुली में धारण करे ।

फिर लड़का इस मन्त्र को पढ़े—

[१]ओं कोऽदात् कस्माऽदात् कामोऽदात् कामायाऽदात् कामो दाता कामः प्रति-गृहीता कामैतत्ते ।

(कः) कौन (अदात्) देता है (कस्मा) किस को (अदात्) देता है (कामः) इच्छा (अदात्) देती है (कामाय) इच्छा के लिये (अदात्) देता है इसलिए (कामो दाता) इच्छा ही देने वाली है (कामः) इच्छा ही (प्रतिगृहीता) लेने वाली है इसलिए (हे काम) हे इच्छे ! एतत् यह (ते) तेरा खेल है ।

इसके बाद वर कन्या के दाएं हाथ को अंगुष्ठ सहित पकड़े और इस मन्त्र को पढ़कर कन्या का हाथ छोड़ दे और लड़की का नाम उच्चारण करे नाम के अन्त में देवी शब्द आना परमावश्यक है ।

[२]ओं यदैषि मनसा दूरं दिशोनुपवमानो वा । हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वा मन्मनसां करोतु । श्री (लड़की का नाम) **देवी ।**

१—कामो दाता गृहीता च कामः कामस्य साधनम् ।
कामाय सकलं तस्मात् कामः साफल्यमाप्नुयात् ॥—स्वपितृपादस्य श्लोकः

२—पित्रा प्रत्तामादाय गृहीत्वा निष्क्रामति इति सूत्रम् ।
"गृहीतकन्याकरो वरो [illegible] ।" इयं प्रथा पंचनदप्रदेशे नास्ति ।

हे कन्ये ! (यदा) जब (मनसा) तुम्हारा चंचल चित्त (दिशा) दिशाओं के (अनु) उद्देश्य से (पवमानः) वायु की (वा[1]) तरह (दूर) बहुत दूर (एषि) चला जाता है तब (सः) वह वायु (हिरण्यपर्णः) सूर्य्य और (वैकर्णः) अग्नि ये तीनों देवता (त्वा) तुझ को (मन्सवसां) मेरे मन के अधीन (करोतु) करें ।

कन्या के पिता के पीछे दक्षिण की ओर मुख करके एक नौजवान आदमी आम्रपत्र से संयुक्त जल से भरे हुए कलश को अपने दाएं कन्धे पर अभिषेक तक चुपचाप उठाए रक्खे ।

इसके बाद कन्या का पिता कहे कि तुम दोनों आपस में देखो ऐसा कहने पर वर और कन्या आपस में देखें और देखते समय वर इन चार मन्त्रों को पढ़े—

ओं अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः । सुवर्चाः वीरसूर्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥

हे कन्ये ! तू (अघोरचक्षुः) सौम्य दृष्टि वाली (एधि)हो (अपतिघ्नी) पति की आज्ञा भंग करने वाली मत (भव) हो (पशुभ्यः) पशुओं की तरह आश्रित नौकरों पर (शिवा) कल्याण करने वाली हो (सुमनाः) प्रसन्न चित्त वाली हो (सुवर्चाः) तेज वाली हो (वीरसूः) वीर पुत्रों को पैदा करने वाली हो (नः) हमें (शम्) सुख देने वाली हो (द्विपदे) मनुष्यों पर तथा (चतुष्पदे) चौपायों पर (शम्) कल्याण करने वाली (भव) हो ।

ओं सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये रयिञ्च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥२॥

१—'मणी वोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम' इत्यत्र । त्ववार्थे व शब्दो वा शब्दो वा बोध्यः, सिद्धान्तकौमुदी ।

(सोमः[१]) चन्द्रमा ने ३० मास भोग करने के बाद (गन्धर्वाय) सूर्य के लिये (अददत्) तुमको दिया और (गन्धर्वः) सूर्य्य ने भी उतना ही समय भोग कर (अग्नये) अग्नि के लिये तुमको (अददत्) दिया और उसने भी (अथः) इसके बाद (मह्यं) मेरे लिये (इमाम्) इस कन्या को (च) और (रयिं) धन (पुत्रान्) पुत्रों (च) और धर्म को (अदात्) दिया ।

ओं सोमः प्रथमो विविधे गन्धर्वो विविद उत्तरः तृतीयोग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजः ॥३॥

हे कन्ये[२] ! (सोमः) चन्द्रमा (ते) तेरा (प्रथमः) पहला (पतिः) है । जिसने (विविधे) तुझ को जन्म दिन से प्राप्त किया । (उत्तरः) अढ़ाई वर्ष भोगने के बाद (गन्धर्वः) सूर्य तुम्हारा अढ़ाई से पांच वर्ष तक दूसरा पति हुआ । इसके अनन्तर पांच से साढ़े सात वर्ष तक (अग्नि) अग्निदेव (ते) तेरा (तृतीयः) तीसरा (पतिः) भर्ता बना ।

वैसे ही (ते) तेरे लिये जीवन पर्यन्त (तुरीयः) चौथा (मनुष्यजः) मनुष्य से उत्पन्न हुआ मैं पति हुआ हूँ ।

ओं सा नः पूषा शिवतमा मीरयसा न ऊरू उशती विहर यस्यामुशन्तः प्रहराम शेफं यस्यामु कामा बहवो निविष्ट्यै ॥४॥

जो जगत् का चक्षु (पूषा) सूर्य्य देवता है (सा) वह इस स्त्री को (शिवतमां) कल्याण गुण शील स्वभाव वाली बनाकर (नः) हमारे प्रति

१—सोमो रूपं ददौ स्त्रीणां गन्धर्वस्तु शुभां गिराम् ।
पावकः सर्वमेध्यत्वं मेध्यावै योषितो ह्यतः ॥

२—पूर्वं स्त्रियः सुरैर्भुक्ता सोमगन्धर्ववह्निभिः ।
प्रतिपाल्याध्याप्य संशोध्य परित्यक्ता नरो भजेत् ॥

(ईरय) प्रेमवाला बनाए (सा) वह स्त्री (नः) हमारे से (उशती) सुख और पुत्रों की कामना करती हुई (ऊरू) जंघाओं को (विहर) पसारे (यस्याम्) जिस स्त्री की योनि में (उशन्तः) सुख और पुत्रों की इच्छा करने वाले हम(शेफम्)[1] लिङ्ग को (प्रहराम)प्रवेश करते हैं और (यस्याम्) जिस स्त्री में (उ) ही (बहवः)बहुत (कामाः) मनोरथ धर्म, पुत्र, रति आदि सुखों को प्राप्त करते हैं, किस लिये–(निविष्ट्यै) सायुज्य नामक मुक्ति के लिये ।

लड़के[2] का पुरोहित कुशा के बने हुए पूले को लेकर उसे अग्नि की तीन प्रदक्षिणा करा कर वर और कन्या के पैरों के नोचे रख दे ।

वर अरघे में जल पुष्प सुपारी इलायची दक्षिणा और मौली (कलावा) की (तन्तु) को डाले और पंडित ब्रह्मा की वर्णी का संकल्प[3] पढ़े—

ओं अद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि कृताकृता वेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुम् (गोत्र का नाम) **गोत्रम्** (ब्राह्मण का नाम) **शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।**

वर मौली की तन्द को लेकर ब्राह्मण के दाएं हाथ में बांधे और बांधते समय ब्राह्मण इस मन्त्र को पढ़े ।

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

१—पुच्छे शेफंच लिंगे तु शेफं केशे भगे तथा ।
भगलिंगोद्भवे केशे शष्पन्तु समुदीरितम् ॥ इति केशवचनम् ।

२—ततोऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चादग्नेरहतवस्त्रवेष्टिततृणपुलके कटे वा दक्षिणपादं दत्त्वा वधूं दक्षिणतः कृत्वा तामुपवेश्य स्वयमुपविशेत् ।
परन्तु इयं प्रथा अस्मिन् पंचनद प्रान्ते नास्ति ।
केचिद् अत्र मनसा त्रिः प्रदक्षिणा कर्तव्या इत्याम्नन्ति ।

३—संकल्प एव मुख्यः स्यात् स्नानदानादिकर्मसु ।
कर्म संकल्परहित तत् सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ कात्यायनः

वर ब्राह्मण को दक्षिणा और सुपारी इत्यादि दे दे और ब्राह्मण कहे—

ओं वृतोस्मि ।

वर ब्राह्मण को कहे—**यथा विहितं कर्म कुरु ।**

ब्राह्मण कहे—**करवाणि ।**

फिर वर दोबारा अरघे में जल पुष्प सुपारी इलायची दक्षिणा और मौली की तन्द डाले और पंडित होता की वर्णी का संकल्प पढ़े ।

ओं अद्य कर्तव्य विवाह होम कर्मणि होतृ कर्म कर्तुम् (गोत्र का नाम) **गोत्रम्** (ब्राह्मण का नाम) **शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दन ताम्बूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे ।**

वर मौली की यन्द लेकर होता के दाएं हाथ में बांधे और बांधते समय होता इस मन्त्र को पढ़े—

ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

वर होता को दक्षिणा और सुपारी इत्यादि देवे और होता कहे—

ओं वृतोस्मि ।

फिर वर होता को कहे—**यथा विहितं कर्म कुरु ।**

होता कहे—**करवाणि ।**

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्त्वा, तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य्य, ब्रह्माण-मग्नि-प्रदक्षिण-क्रमेणानीय, अत्र त्वं मे ब्रह्मा भवेत्यभिधाय

कल्पितासने उपवेशयेत्। ततः प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, ब्रह्मणो मुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्॥

इसके बाद अग्नि के दक्षिण[1] की तरफ, शुद्ध आसन[2] को देकर, उसके ऊपर पूर्व की तरफ है अगला भाग जिनका, ऐसी कुशाओं को बिछा कर ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर ले आए। यहाँ 'आप मेरे इस विवाह

१—दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य्य इति सूत्रम्।
यमो वैवस्वतो राजा वसति दक्षिणदिशि।
तस्मात् संरक्षणार्थं हि ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे।

२—चटकाधानन्यायेन बहुत्वेऽपि त्रिभिः कुशैराच्छादयेत्।
ब्रह्माचार्य्यप्रणीतानामासनं च त्रिभिः कुशैः।
य द्वाभ्यां नैकदर्भेण ऋषयो बहवो विदुः॥ इत्यग्निगृह्ये।
यजमानः शुचिः स्नातः श्रद्धायुक्तो जितेन्द्रियः।
पादशौचार्घवस्त्राद्यै राचार्यादीन् समर्चयेत्॥ वसिष्ठवचनम्।
द्वादशांगुलदीर्घेण चतुरस्रः सगर्तकः।
प्रस्थमात्रोदकग्राही प्रणीता चमसो भवेत्॥ कुशकण्डिकाभाष्ये।
कुशाऽलाभे काशादयः गृहीतव्या इति वैदिकन्यायम्।
कृमिकीटपतंगाश्च विचरन्ति महीतले।
तेषां संरक्षणार्थाय परिसमुह्येति कथ्यते॥ बादरायणः।
पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो राजा महासुरः।
व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम्॥ आचार्य्यः।
फलेन फलमाप्नोति पुष्पेण श्रियमृच्छति।
पत्रेण धनलाभश्च दीर्घमायुः कुशेन तु॥ संग्रहकारे त्रिरेखाकरणम्।
ये भ्रमन्ति पिशाचाद्या आकाशस्य तु वामतः।
तेषां प्रहरणार्थाय उद्धृत्य कथितं नरैः॥ बादरायणः।
अग्निमानीय पात्रे तु प्रक्षिपेदक्षतोदकम्।
यद्येवं नैव कुर्वीत यजमानभयावहम्॥
इत्यादीनि कार्य्याणि पूर्वं कृत्वा वरपुरोहितः कुशकण्डिकां आरभेत्।

में ब्रह्मा बनो ऐसा कह कर, कल्पित आसन पर ब्रह्मा को बिठलाए। इसके बाद प्रणीतापात्र को उनके आगे रख कर, उसे जल से भर कर, कुशाग्रों से ढांप कर ब्रह्मा के मुख को देख कर अग्नि के उत्तर की तरफ कुशा के ऊपर रख दे।

(ततः परिस्तरणं) बर्हिषश्चतुर्थ-भाग-मादाय आग्नेय्यादीशानांतं ब्रह्मणोग्नि-पर्यंतं नैर्ऋत्याद् वायव्यांतम् अग्निः प्रणीतापर्यंतं ततोग्ने-रुत्तरतः पश्चिम-दिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्र-करणार्थं साग्रमनंतर्गर्भ-कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली-संमार्जनार्थं-कुशत्रयम् उपयमनार्थं वेणीरूप-कुशत्रयं समिधस्तिस्रः स्रुवः आज्यं षट् पंचाश-दुत्तर-वर-मुष्टि-शत-द्वया-वच्छिन्नं तंडुल-पूर्णपात्रम्।

(इसके बाद कुशा को अग्नि के चारों तरफ बिछाना) ६४ के चतुर्थ भाग १६ कुशाग्रों को लेकर, अग्नि कोण से ईशानकोण तक ४ कुशा धरे। ब्रह्मा से अग्नि तक ४ कुशा धरे। नैर्ऋतकोण से वायुकोण तक ४ कुशा धरे। अग्नि से प्रणीता तक ४ कुशा रख देवे। इसके बाद अग्नि से उत्तर की तरफ पश्चिम दिशा में, पवित्र छेदन के लिये तीन कुशा रखे। पवित्रा बनाने के लिये अग्रभाग सहित और बीच के पत्ते से रहित ऐसे दो कुशपत्र प्रोक्षणीपात्र, घी का बरतन[1], संमार्जन के लिये तीन कुशा, उपयमन के लिये

१—आज्यस्थाली तैजसी मृत्मयी वा।
आज्यस्थाली मृन्मयी वा प्रकर्तव्याग्निकर्मसु।
आज्यस्थालीप्रमाण वै यथाकाम तु कारयेत्॥ कर्मप्रदीप

वेणी रूप तीन कुशा, तीन समिधा,[१] स्रुवा,[२] घी,[३] वर के २५६ मुट्ठी प्रमाण चावलों से भरा हुआ पात्र[४] ।

१—न जीर्णा द्विदला ह्रस्वा वक्राः सशिखराः कुशाः ।
दीर्घाः स्थूला घुणैर्जुष्टाः कर्मसिद्धिविनाशकाः ।। मरीचिः
स्थूलया ह्रीयते लक्ष्मीः कृशया जायते क्षयः ।
द्विधया नेत्ररोगः स्यात् कीटदंष्टार्थनाशिनी ।।
द्वेषं प्रकुर्वते दीर्घा प्राणघ्ना निस्त्वचः स्मृताः ।
सक्षीरा नाधिका नोनाः समिधः सर्वकामदाः ।।
आर्द्राः सत्वक् समाविद्धा तर्जन्यंगुलवर्तुलाः ।
ईदृशीं होमयेत् प्राज्ञः प्राप्नोति विपलां श्रियम् ।।
श्रौते स्मार्ते च तत्रोक्ताः समिधः परिकीर्तिताः ।
पलाशफल्गुन्यग्रोधाः प्लक्षाश्वत्थविकङ्कताः
उदुम्बरास्तथा विल्वो चन्दना यज्ञिपाश्च ये ।।
समिदर्थे प्रशस्तास्तु एते वृक्षा विशेषतः ।
सरलो देवादारुश्च शालश्च खदिरस्तथा ।
बब्बुलं विहाय ग्राह्याः कण्टकिन इत्येके ।
२—खादिरेण स्रुवः कार्यः पालाशेन जुहुर्भवेत् ।।
तदभावे पलाशस्य पर्णाभ्यां हूयते हविः ।
पलाशपर्णाभावे तु पर्णैर्वा पिप्पलोदभवैः ।। कुशकण्डिकाभाष्ये ।
'खादिरः स्रुवः' कात्यायनश्रौतसूत्रम् ।
३—आज्यार्थे गोघृतं ग्राह्यं तदभावे च तैलमपि इष्यते । गोमिलाचार्य्यः ।
उत्तम गोघृतं ज्ञेयं मध्यमं महिषीघृतम् ।
अधमं छागलीजातं तस्माद् गव्यं प्रशस्यते ।। पिंगलमतम् ।
आज्याभावे गृहीतव्यं सतैल तिलसंभम् ।
तदभावे यवव्रीहिश्यामकान्यतमो भवेत् ।।
घृतं वा यदि वा तैलं पयो वा दधि पावकम् ।
आज्यस्थाने नियुक्तानामाज्यशब्दो विधीयते ।।
४—अष्टमुष्टिर्भवेत् कुञ्चः कुञ्चाष्टौ च पुष्कलम् ।
पुष्पकलानि च चत्वारि पूर्णपात्रस्य लक्षणम् ।।
बहुभोक्तृपुरुषाहारपरिमितं तण्डुलाद्यन्नं पूर्णपात्रमिति हरिहरभाष्ये ।

पवित्रछेदनकुशानां पूर्वपूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम्। अथ तस्यामेव दिशि असाधारण-वस्तून्युपकल्पनीयानि तत्र शमीपलाशमिश्रा लाजा दृषद्रुपलं कुमारी भ्राता शूर्पः दृढपुरुषः अन्यदपि युक्तमालेपनादि द्रव्यम्। ततः पवित्रछेदनकुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्तराग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुत्पवनं ततः प्रोक्षणीपात्रस्य सव्यहस्तकरणम्, अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनं प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम्।

इन सब वस्तुओं को पवित्रछेदन की कुशाओं से आगे पूर्व पूर्व की तरफ़ क्रम से रखता जाए। इसके बाद उसी दिशा में इन ज़रूरी वस्तुओं को भी इकट्ठा करे। वे ये हैं। जंडी के पत्तों[1] से मिली हुई फुल्लियां[2], पत्थर[3], लड़की के भाई, छाज, कोई ऋष्टपुष्ट पुरुष तथा और भी उस विवाह के योग्य आलेपनादि द्रव्य रखे। फिर पवित्रा बनाने वाली कुशाओं से पवित्रे[4] को बना कर, पवित्रा सहित प्रणीता के जल को हाथ में लेकर तीन वार प्रोक्षणीपात्र में डाले। अनामिका और अंगुष्ट इन से पवित्रों के अग्रभाग को आगे करके ग्रहण करे। इसके बाद प्रोक्षणीपात्र का जल तीन बार ऊपर

---

१ शमी शमयति रोगान् इति शमी।

२ लाजाः लज्यन्ते भृज्यन्ते इति लाजाः।

३ विस्तारो दृषदः प्रोक्तो द्वादशाङ्गुलसंख्यया। हरिहरभाष्ये।

४—पवित्रं द्विदलं प्रोक्तं ब्रह्मग्रन्थिसमन्वितम्।
प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कुत्रचित्।

को उछाले। प्रोक्षणीपात्र को वांएँ हाथ में रखकर दाहिने हाथ की अनामिका और अंगुष्ठ से पवित्रों को ग्रहण कर तीन वार जल को ऊपर की तरफ़ फैंके। इसके बाद प्रणीता के जल से प्रोक्षणीपात्र को सिंचन करे।

ततः प्रोक्षणीजलेन यथासादित-वस्तु-सेचनं ततोऽग्नि-प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्र-निधानम्, आज्यस्थाल्या-माज्य-निर्वापः ततोऽधिश्रयणं ततो ज्वलित-तृणादिना हविर्वेष्टयित्वा प्रदक्षिणक्रमेण पर्यग्निकरणं ततः स्रुवप्रतपनं कृत्वा संमार्जन-कुशाना-मग्रै-रंतरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुव-संमार्जनं प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पुनः प्रताप्य स्रुवं दक्षिणतो निदध्यात् आज्यस्याग्नेरवतारणम्।

इसके बाद प्रोक्षणी के जल से पूर्व स्थापित वस्तुओं को सेचन करे। फिर अग्नि और प्रणीतापात्र के मध्य में प्रोक्षणीपात्र को रख देना चाहिये। फिर आज्यस्थाली में घी डाल कर अग्नि पर चढ़ा देवे। और फिर एक कुशा को जला कर प्रदक्षिण क्रम से घी के चारों ओर घुमा कर अग्नि में डाले। इसके बाद स्रुवे को तपाए। तपाकर संमार्जन कुशाओं के अग्रभाग से स्रुवे के बीच और मूल भाग से बाहर स्रुवे को शुद्ध कर, प्रणीता के जल से सेचन पूर्वक फिर दूसरी बार तपाए और तब उसको अग्नि के दक्षिण की ओर रखदे। फिर उस घी को अग्नि से उतारे।

तत आज्यस्य प्रोक्षणीवदुत्पवनं अवेक्ष्य सत्यपद्रव्ये तन्निरसनं पुनः पूर्ववत प्रोक्षणीवदुत्पवनं तत उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय उत्तिष्ठन्

प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णी-मग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रःक्षिपेत् तत उपविश्य स पवित्रप्रोक्षण्युदकेन-प्रदक्षिण-क्रमेणाग्निपर्युक्षणं कृत्वा पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय पातित-दक्षिण-जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धःसमिद्धतमेऽग्नौस्रुवेणाज्याहुतिं जुहोति तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनंतरं स्रुवावस्थिताहुति-शेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥

इसके बाद घी को प्रोक्षणीपात्र की तरह पवित्रों से उछाले और देखे कि यदि उसमें कोई मक्खी इत्यादि अपवित्र वस्तु हो तो उसको निकाल कर फेंक देना चाहिये। फिर प्रोक्षणीपात्र के ज़ल को पवित्रों से उछाले। इसके बाद उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में लेकर खड़ा हो जाये और पहले रखी हुई तीन समिधाओं को घृत में भिगो कर मन में प्रजापति को ध्यान करके चुपचाप अग्नि में डाल देवे फिर बैठ कर पवित्रों सहित प्रोक्षणीपात्र का जल हाथ में लेकर अग्नि के चारों तरफ सेचन करे और पवित्रों को प्रणीता पात्र में रख देवे इसके बाद दाहिने गोडे[1] को नवाय (झुका) कर कुशा से या मौली से ब्रह्मा के साथ मिली हुई अग्नि में स्रुवे से घी की आहुतियां देवे इन आहुतियोंमें आधार आहुतियों से लेकर १२ आहुतियों तक स्रुव में रहे शेष घी को प्रोक्षणी-पात्र में डालता जाए ॥

आघार नाम वाली २ आहुतियां

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये

(इसे मन में पढ़े) **(२) ॐ इंद्राय स्वाहा। इदमिंद्राय।**

१—दक्षिणं पातयेज्जानु देवान् परिचरन् सदा।

पातयेदितरज्जानु पितॄन् परिचरन्नपि। गोभिलीय गृह्यसूत्रभाष्ये।

आज्य भाग वाली २ आहुतियाँ।

(३) ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये (४) ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय।

महाव्याहृति नाम वाली ३ आहुतियाँ।

(५) ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये (६) ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे (७) ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय।

प्रायश्चित नाम वाली ५ आहुतियाँ।

(८) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳫसि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नी-वरुणा-भ्याम्। ॐ सत्वन्नो अग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयद्‌क्ष्वनो वरुण रराणो वीहि मृडीकᳫसुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नी-वरुणाभ्याम् (१०) ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्ति पाश्च सत्य मित्व मया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजᳫ स्वाहा। इदमग्नये (११) ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महांतः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु-र्विश्वे मुंचंतु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा। इदं वरुणाय

१—सर्वमंत्रप्रयोगेषु प्रणवः प्रथमः स्मृतः।

सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च । (१२) ओं उदुत्तमं वरुण-पाश-मस्मद वाधमं विमध्यम ऽश्रशाय । अथा-वय-मादित्य-व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय

कुशा रूप ब्रह्मा से लगी हुई मौली को हटा कर हवन करे।

राष्ट्रभृत् हवन की १२ आहुतियाँ ।

(१३) ओं ऋताषाड् ऋत धामाग्नि-र्गंधर्वः स न इदं ब्रह्म-क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इद-मृता साहे ऋत धाम्ने अग्नये गंधर्वाय (१४) ओं ऋताषाड् ऋत-धामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयो ऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमौषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यः (१५) ओं स ऽ हितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्॥ इद ऽ स ऽ हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गंधर्वाय (१६) ओं स ऽ हितो विश्वसामा सूर्यो गंधर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदं मरीचिभ्यो ऽप्सरोभ्य आयुवोभ्यः (१७) ओं सुषुम्णः सूर्यरश्मि-श्चंद्रमा गंधर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इद ऽ

सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गंधर्वाय (१८) ॐ सुषुम्णः सूर्य-रश्मि-श्चंद्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्रा-एयप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा इदं नक्षत्रेभ्यो ऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यः (१९) ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गंधर्वः स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदमिषिराय विश्व-व्यचसे वाताय गन्धर्वाय (२०) ॐ इषिरो विश्व व्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापो ऽप्सरस ऊर्ज्जो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदमद्भयो ऽप्सरोभ्य ऊग्भ्यः (२१) ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं भुज्यये सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय (२२) ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्व-स्तस्य दक्षिणाप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा इदं दक्षिणाभ्यो ऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यः (२३) ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म

विवाहे होमयेन्नित्यं राष्ट्रभृद् द्वादशाहुतीः ।
जयाहुतिदशस्त्रींश्च होमयेत् तत्र चेच्छया ।
अष्टादशाऽपि जुहुयादभ्यातानाहुतीस्तथा ।

साङ्ख्यायनः ।

त्त्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं प्रजापतये विश्व-कर्मणे मनसे गन्धर्वाय (२४) ॐ प्रजापतिर्विश्व-कर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदमृक सामेभ्यो ऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यः ।

जय हवन की १३ आहुतियाँ ।

(२५) ॐ चित्तं च स्वाहा । इदं चित्ताय (२६) ॐ चित्तिश्च स्वाहा । इदं चित्त्यै (२७) ॐ आकूतं च स्वाहा । इदमाकूताय । (२८) ॐ आकूतिश्च स्वाहा । इदमाकूत्यै (२९) ॐ विज्ञातं च स्वाहा । इदं विज्ञाताय (३०) ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा । इदं विज्ञात्यै (३१) ॐ मनश्च स्वाहा । इदं मनसे (३२) ॐ शक्वर्य्यश्च स्वाहा । इदं शक्वरीभ्यः (३३) ॐ दर्शश्च स्वाहा । इदं दर्शाय (३४) ॐ पौर्णमास-श्च स्वाहा । इदं पौर्णमासाय (३५) ॐ बृहच्च स्वाहा । इदं बृहते (३६) ॐ रथंतरं च स्वाहा । इदं रथंतराय (३७) ॐ प्रजापतिर्जया निंद्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु । तस्मै विशः समनमंत सर्वाः स उग्रः स इहव्यो बभूव स्वाहा । इदं प्रजापतये जया निंद्राय ॥

अभ्यतान होम की १८ आहुतियाँ ।

(३८) ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरो धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ४ स्वाहा ॥ इदमग्नये भूतानामधिपतये (३९) ॐ इन्द्रो ज्येष्ठाना मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्याम्पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ४ स्वाहा । इद-मिंद्राय ज्येष्ठाना मधिपतये (४०) ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ४ स्वाहा । इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये ।

वर का पुरोहित प्रणीता[1] के जल को अपने दाएँ हाथ की पांचों अंगुलियों से स्पर्श करे और फिर अपने जल स्पर्श किये हाथ को वर के दाएँ हाथ की अंगुलियों से स्पर्श कराए ।

(४१) ॐ वायुरंतरिक्षस्याधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्तस्यां पुरो धाया-

---

१—अम्भोजमुकुलाकारं दक्षहस्तं निमज्जयेत् ।
प्रणीताप्सु सुशान्त्यर्थं मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥ अग्निपुराणे ।
यमो रुद्रश्च पितरः कालो मृत्युश्च पंचमः ।
पंच क्रूराः विवाहस्य होमे तच्छान्तिमाचरेत् ॥ [illegible]स्मृतिः ।

मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा । इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये (४२) ॐ सूर्यो दिवा अधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या-माशिष्यस्यां पुरो धाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं सूर्याय दिवाअधिपतये (४३) ॐ चंद्रमा नक्षत्राणा मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया-मस्मिन् मर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा । इदं चन्द्र-मसे नक्षत्राणा मधिपतये (४४) ॐ बृहस्पति ब्रह्म-णो धिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे-स्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा ॥ इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये (४५) ॐ मित्रः सत्याना मधिपतिः स मा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा । इदं मित्राय सत्याना मधिपतये (४६) ॐ वरुणोऽपा मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्य-स्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा । इदं वरुणायाऽपा मधिपतये (४७) ॐ समुद्रः

यद्देवा अभ्यातानैर्मन्त्रैरसुरानभ्यातन्वन् । श्रुतिवचनम् ।

स्रोत्याना मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्म-
ण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा। इदं समुद्राय स्रो-
त्यानामधिपतये (४८) ॐ अन्न साम्राज्याना-
मधिपतिः स मा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या
मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देव
हूत्या ७ स्वाहा। इद मन्नाय साम्राज्याना मधि-
पतये (४९) ॐ सोम औषधीना मधिपतिः समा
वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां
पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा।
इदं सोमाय औषधीना मधिपतये (५०) ॐ सविता
प्रसवाना मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्य-
स्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन्
कर्मण्यस्यां देवहूत्या ७ स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवाना
मधिपतये (५१) ॐ रुद्रः पशूना मधिपतिः समा
वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेस्या मा शिष्यस्यां
पुरोधाया मस्मिन् र्मांकण्यस्य देवहूत्या ७ स्वाहा।
इदं रुद्राय पशूना मधिपतये।

प्रणीतोदकस्पर्शः।

वर का पुरोहित प्रणीता के जल को अपने दाए हाथ की अंगुगियों से स्पर्श करे और फिर अपने जल स्पर्श किये हाथ को वर के दाए हाथ की अंगुलियों से स्पर्श कराए।

(५२) ॐ त्वष्टा रूपाणा मधि पतिः समा वत्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् चत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरो-
धाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ᳪ स्वाहा। इदं
त्वष्ट्रे रूपाणा मधिपतये (५३) ॐ विष्णुः पर्व-
ताना मधिपतिः समा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्
चत्रेस्या मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्म-
ण्यस्यां देवहूत्या ᳪ स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वताना
मधिपतये (५४) ॐ मरुतो गणाना मधिपतय-
स्ते मा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् चत्रेस्या मा
शिष्यस्यां परोधाया मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या
ᳪ स्वाहा। इदं मरुद्भ्यो गणाना मधिपतिभ्यः
(५५) ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततास्तता
महा इह ते मा वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्यिन् चत्रेस्या
मा शिष्यस्यां पुरोधाया मस्मिन् कर्मण्स्यां देव-
हूत्या ᳪ स्वाहा। इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परे-
भ्यो ऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्तता महेभ्यः।

प्रणीतोदकस्पर्शः।

वर का पुरोहित प्रणीता के जल को अपने दाएँ हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करे और फिर अपने जल स्पर्श किये हाथ को वर के दाएँ हाथ की अंगुलियों से स्पर्श कराए।

आज्य होम की आहुतियाँ

(५६) ॐ अग्नि रैतु प्रथमो देवता ना ँ सोस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु पाशात् । तदय ँ राजा वरुणो ऽनुमन्यतां यथेय ँ स्त्री पौत्र मघं नरो दात् स्वाहा । इदमग्नये० (५७) ॐ इमा मग्नि स्त्रयतां गार्हपत्यः प्रजा मस्यै नयतु दीर्घं मायुः । अशून्यो पस्था जीवता मस्तु माता पौत्र मानंद मभि विबुध्यता मिय ँ स्वाहा । इदमग्नये० (५८) ॐ स्वस्तिनो ऽग्ने दिवा पृथिव्या विश्वानि धेह्य यथा यजत्र । यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्र ँ स्वाहा । इदमग्नये० (५९) ॐ सुगन्नः पंथा प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्य जरन्न आयुः । अपैतु मृत्यु रमृतं न आगा द्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु स्वाहा । इदमग्नये० ।

प्रणीतोदकस्पर्शः ।

वर का पुरोहित प्रणीता के जल को अपने दाएं हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करे और फिर अपने जल स्पर्श किये हाथ को वर के दाएं हाथ को अंगुलियों से स्पर्श कराए ।

अन्तर पट

वर और कन्या के मध्य में कन्याएं चादर को तान दें या वर ही तौलिये या रुमाल को अपने और कन्या के बीच में तान ले और अगली आहुति चुपचाप देवे ।

(६०) ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पंथां यस्ते अन्य इतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मानः प्रजा ७ रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा । इदं मृत्यवे० ।

प्रणीतोदकस्पर्शः ।

वर का पुरोहित प्रणीता के जल को अपने दाएँ हाथ की अंगुलियों से स्पर्श करे और फिर अपने जल स्पर्श किये हाथ को वर के दाएं हाथ की अंगुलियों से स्पर्श कराए ।

वर और कन्या हवन के लिये पूर्वाभिमुख[1] खड़े हों लड़की की अंजली ऊपर हो उसके नीचे लड़के की अंजली कन्या की अंजली के साथ उसकी सहायता करने के लिये लगी हो लड़की के भाई लड़की की अंजली में जंडी और घी से मिली हुई फुल्लियां डालें और फिर लड़की तीनों मन्त्रों से अग्नि में फुल्लियां गेरे ।

१—वरादग्रे वधूः स्थित्वा लाजाहोमं समाचरेत्—स्मरणात्
प्रस्थस्य च चतुर्थांशं व्रीहीणां भर्ज्जयेत् सुधीः ।
तान् लाजान् जुहुयाद् वह्नौ भ्रातृदत्तान् तथाञ्जलौ ।।
शमीपलाशमिश्रांश्च घृतेनाप्यभिघारितान् ।
सह शूर्पस्य कोणेन दर्शवाहुतयस्तथा ।। कल्पतरौ व्याख्यानात्
भ्रातृदत्तान् शमीपलाशमिश्रान् लाजान् संहतेनाञ्जलिना जुहुयात् । इति वचनम्
भ्रातृस्थाने पितृव्यस्य मातुलस्य च यः सुतः मातृस्वसुः सुतः तद्वत् पितृष्वसुः सुतः ।
आश्वलायनगृह्ये

वधूवरौ तु प्राक् स्थित्वा संहृत्य स्वकराञ्जलिम् ।
त्रिभिर्मन्त्रैर्हुनेत् लाजान् भ्रातृदत्तान् यथाविधिः ।।
घृताभिघारितांश्चैव मिश्रितांश्च शमीदलैः ।
सांगुष्ठहस्तं गृह्णीयाद् वरो वध्वा यदा पुनः ।।
अश्मन्यारोहयेद् गाथोद्गानं कुर्याद् वरस्तथा ।
वरोऽग्रे च वधूं कृत्वा वह्निं ब्रह्मादिसंयुतम् ।।
परिक्रमेद्विप्रयतो द्विवारन्तु पुनस्तथा ।
भ्रातृदत्तान्छिललाजान् शूर्पकोणेन वाञ्जलौ ।।

लाजा होम

ओं अर्यमणं देवं कन्या अग्नि मयक्षत । सनो अर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा ॥ इदमर्यम्णे० ॥१॥

यह (कन्या) कन्या पहले वर प्राप्ति के लिये (अग्नि) अग्निस्वरूप (अर्यमणं) सूर्य्य (देवं) देव को (अयक्षत) पूजती है (सः) वह (अर्यमा) सूर्य्य (देवः) देव (नः) हमको (इतः) (प्रेतः) इस पितृकुल से (प्रमुंचतु) छुड़ाए और (पतेः) पति से (मा) मत (प्रमुंचतु) छुड़ाए (इदम्) यह अग्नि में डाला हुआ द्रव्य (अर्यम्णे) सूर्य्य के लिये है ।

ओं इयं नार्युपब्रूते लाजानावपंतिका । आयुष्मानस्तु मे पति रेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥२॥

यह नारी अग्नि में फुल्लियों को डालती हुई पति के पास खड़ी इन शब्दों को कहती है ।

(इयं) यह (नारी) स्त्री (लाजान्) फुल्लियों को अग्नि में (आवपन्तिका) डालती हुई (उप) पति के समीप खड़ी (ब्रूते) कहती है कि (मे) मेरा (पतिः) पति (आयुष्मान्) लम्बी उमर वाला (अस्तु) हो और (मम) मेरे (ज्ञातयः) कुटुम्ब के लोग (एधन्ताम्) धन धान्यादि से बढ़ें ।

ओं इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनु मन्यतामिय ँ स्वाहा ॥ इदमग्नये० ॥३॥

भगाय स्वाहेत्युक्त्वा तु तांस्तु वह्नौ हुनेद् वधूः ।
वरोऽग्रे च ततो भूत्वा वध्वास्तूष्णीं परिक्रमेत् ॥ राजमार्तण्डः
भ्रष्टव्रीहिर्भवेल्लाजा शमीदलविमिश्रता ।
कन्याहोमं प्रकुर्वीत भर्तुर्भ्रातुश्च संगमे ॥ संस्कारभास्करे

हे पति देव ! (इयम्) यह मैं (तव) तुम्हारी (समृद्धिकरणम्) वृद्धि के लिये (इमान्) इन (लाजान्) फुल्लियों को (अग्नौ) अग्नि में (आवपामि) डालती हूँ (मम) मेरे (च) और (तुभ्यम्) तुम्हारे (तत्) उस (संवननम्) परस्पर प्रेम को (अग्निः) अग्नि देवता (अनुमन्यताम्) अनुमोदन करें।

वर कन्या के अंगुष्ठ सहित दाएँ हाथ को पकड़े और इन मन्त्रों को पढ़ें—

ओं गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या-जरदष्टिर्यथा सः। भगो अर्यमा सविता पुरंधिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः॥

हे कन्ये (ते) तुम्हारे (हस्तं) सांगुष्ठ हाथ को (सौभगत्वाय) सौभाग्य[1] के लिये (गृभ्णामि) मैं ग्रहण करता हूं (मया) मुझ (पत्या) पति के साथ (जरदष्टिः) वृद्धावस्था को (यथा) सुख पूर्वक प्राप्त (आसः) हो (भगः) भग (अर्यमा) अर्यमा (सविता) सविता इन तीन (देवाः) देवताओं ने (त्वा) तुझ (पुरन्धिः[2]) रूपवती को (मह्यम् मेरे लिये (अदुः) दिया है (गार्हपत्याय) गृहस्थाश्रम के लिये।

ओं अमोऽह मस्मि सा त्व ँ सा त्वमस्यमोऽहम् सामाह मस्मि ऋक् त्वं द्यौ रहं पृथिवी त्वम्।

१—पूर्वं मर्द्दन चीरहारतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं नासामौक्तिकपुष्पमालकरणं झंकारकृन्नूपुरम्। अंगे चन्दनलेपकंचुकमणिक्षुद्रावली घण्टिकास्ताम्बूलं करकंकणं चतुरता शृङ्गारकाः षोडश। क्षौर मर्द्दनशीर्षवस्त्रतिलकं गात्रे सुचित्रार्चनं कर्णे कुण्डल-मुद्रिका च मुकुटं पादौ च चर्मावृतौ। हस्ते शस्त्रपटाम्बर कटिच्छुरी विद्याविनीतं मुखं ताम्बूलं सुरशीलवत्त्वगुणिता पुंसस्त्वमी षोडश।

२—रूपवत्यां पुरन्धिः स्यात् पुरन्धिर्मोहिनी मता।
प्रशस्तायामपि च सा पुरन्धिर्धृतकौतुकेति॥ कामकन्दलिकायाम्।
पुरन्धिः अत्र द्वितीयार्थे प्रथमा।

हे पत्नि (अहम्) मैं (अमः) विष्णु (अस्मि) हूं (सा) लक्ष्मी[1] (त्वम्) तुम (असि) हो (सा) सरस्वती लक्ष्मी रुद्राणी देवीत्रयरूपा (त्वम्) तुम (असि) हो और (अमः) ब्रह्मा विष्णु शिव देवत्रयरूप (अहम्) मैं (अस्मि) हूं (अहम्) मैं (सामः) साम[2] वेद (अस्मि) हूँ तो (त्वम्) तुम (ऋक्) ऋचा हो (अहम्) मैं (द्यौः) आकाश हूँ तो (वम्) तुम (पृथिवी) पृथिवी हो ।

ॐ तावेव विवहावहै सह रेतो दधावहै प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् ।

हे पत्नि (तौ) वही हम दोनों (विवहावहै) विवाह करें (सह) रज के साथ (रेतः) वीर्य्य को (दधावहै) धारण करें (प्रजां) सन्तति को (प्रजनयावहै) उत्पन्न करें (बहून्) बहुत (पुत्रान्) पुत्रों को (विन्दावहै) हम दोनों प्राप्त करें ।

ओं ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम् ।

(ते) वे पुत्र (जरदष्टयः) लम्बी उमर वाले (सन्तु) हों और (संप्रियौ) हम दो आपस में प्रेम करें (रोचिष्णू) तेजस्वी होवें (सुमनस्यमानौ) सुन्दर मन वाले होवें और हम (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतुओं तक (पश्येम) देखें (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतुओं तक (जीवेम) जीवें और (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतुओं तक (शृणुयाम) सुनें ।

अग्नि के उत्तर की तरफ जो पत्थर रखा है उस पर चरण रखने के लिये वर कन्या को कहे और कन्या अपना दायां चरण उस पर रखे ।

---

१ "सा" शब्दः अत्र संज्ञावाचकः लक्ष्म्यर्थबोधकः, न तु सर्वनाम ।

२ वेदानां सामवेदोऽस्मि — इति गीता

ॐ आरोहे[1] ममश्मान मश्मेव त्वं स्थिरा भव अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्व पृतनायतः ।

हे पत्नि (त्वम्) तू (इमम्) इस सामने पड़े हुए (अश्मानं) पत्थर पर (आरोह) चढ़ और (अश्म) पत्थर की (इव) तरह तू (स्थिरा) मजबूत (भव) हो और (अभितिष्ठ) मजबूती से बैठ (पृतन्यतः) झगड़ा करने वाले और (पृतनायतः) युद्ध करने के लिए आये हुओं को (अवबाधस्व) परास्त कर ।

लड़की के पत्थर पर पैर रखने पर लड़का हाथ जोड़ कर इस वैदिक गाथा को कहे ।

ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति । यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजाया मस्याग्रतः । यस्यां भूत ७ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणा मुत्तमं यशः ।

(सरस्वति[2]) हे सरस्वति (सुभगे) हे सौभाग्यशालिनि (वाजिनीवति) हे अन्नपूर्णे (इदं) इस पति-पत्नी के जोड़े की (प्र)

१—अथैनां अश्मानमारोहयति । इति सूत्रवचनम्

अत्र केचिद् 'वरः स्वयं दक्षिणचरणेन कन्यामारोहयेत्' इत्यामनन्ति ।

केचिद् 'वरमन्त्रोक्तप्रेरिता स्वयं आरूढा भवेत्' इति कथयन्ति ।

कुर्मायाः दक्षिणपादं स्वदक्षिणहस्तेन गृहीत्वा आरोहेममिति मन्त्रेण वरः अश्मानमुपरि करोतीति हरिहरभाष्यात् ।

गत्वोभावुत्तरेणाग्नि तस्याः सव्येतरं करम् ।
सव्येनादाय हस्तेन वधूपादन्तु दक्षिणम् ॥
शिलामारोहयेत् प्रागायतां दक्षिणपाणिना । वासुदेवभट्टकारिका ।
वरः स्वदक्षिणकरेण कन्यायाः दक्षिणचरणं गृहीत्वा प्रस्तरोपरि प्रस्थापयेत् ॥

२—अथ गाथां गायतीति गृह्यसूत्रम् ।

अथाश्मारूढायामेव कन्यायां वरो गाथां गायति इति सूत्रम्, गीयते स्तूयतेऽनयेति गाथा।

सरस्वती श्वेतवर्णा हंसारूढा महाद्युतिः ।

सर्वेभ्योऽपि विचित्रान्नप्रदा विद्यानुरागिणी ॥

अच्छी तरह (अव) रक्षा करो (त्वा) तुम को (अस्य) इस (विश्वस्य) संसार के (भूतस्य) पृथिव्यादि प्रपंच के (अग्रत:) सब से पहले (प्रजायां) सब से उत्तम जन्मदात्री कहते हैं (यस्यां) जिस प्रकृति रूप तुझ में (इदं) यह सब (विश्वं) पृथिव्यादि (जगत्) संसार अंधकारमय था फिर (यस्यां) जिस तुझ में (समभवत्) ज्ञानमय उत्पन्न हुआ, इस लिये मैं (स्त्रीणां) पतिव्रता स्त्रियों की (अद्य) आज (तां) उस (गाथां) कथा को (गास्यामि) गाता हूँ (या) जो (उत्तमं) श्रेष्ठ (यश:) कीर्ति को बढ़ाने वाली है।

आगे लड़की पीछे लड़का अग्नि की प्रणीता और ब्रह्मा के सहित प्रदक्षिणा करें और पण्डित इस मन्त्र को पढ़े।

ओं तुभ्य मग्रे पर्य्यवहन्त् सूर्य्यां वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह॥

(अग्रे)[1] हे अग्निदेव (तुभ्यं) तुम्हारे[2] लिये ही (अग्रे) पहले सोमादि देवताओं ने इसे (पर्य्यवहन्त्) ग्रहण किया इस लिए (सूर्य्यां) सूर्य्य के समान शोभा वाली इस कन्या को (ना) पुरुष (वहतु) प्राप्त करे। (पुन:) पश्चात् (पतिभ्य:) सोम गन्धर्व और अग्नि इन (पतिभ्य:) पतियों के भोगने के अनन्तर (जायां) सूर्य्य की स्त्री रूपा इनको प्राप्त कर और उसको स्त्रीत्व से भोग कर (प्रजया) पुत्र पौत्रों के (सह) साथ मुझे (दा) दो।

१—प्राजग्राहमुदग्राहं ब्रह्माणं ऋत्विजं तथा।
एतानि बाह्यतः कृत्वा शेषाणां तु प्रदक्षिणम्॥
तयोस्तु संरक्षणार्थाय तस्माद् ब्रह्मा बहिर्भवेत्। इति स्मृतिवचनम्।
परिक्रमणं कुर्वन्तौ वधूवरौ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये न गच्छेतामिति हरिहर:।
ब्रह्माग्न्योर्मध्ये गच्छेतामिति गदाधर:।
ददाति शिक्षां कन्यां सोमश्चाद्य प्रदक्षिणे।
गन्धर्वस्तु द्वितीयाख्ये तृतीये च हुताशन:। व्यास:
प्रथमं रक्षति सोम: द्वितीये नागदेवता।
तृतीये रक्षति वह्निः सूर्यो रक्षति कन्यकां।
लाजाहोमे तु संप्राप्ता: चन्द्रगन्धर्ववह्नय:।
तान् हि सा पूजयेत् कन्या पुत्रपौत्रसुखावहा॥
२—षडब्दमध्ये नोद्वाह्या कन्या वर्षद्वयं यत:।
सोमो भुंक्ते न तां तद्वद् गन्धर्वोऽग्नस्तु एव च॥

इसके बाद (ओं अर्य्यमणं) इस मन्त्र से लेकर (ओं तुभ्यग्रे) इस मन्त्र तक जो तरीका पीछे लिखा है वैसे ही करे यह दूसरी (लां या फेरी) है। इसी क्रम को तीसरी बार करे यह तीसरी (लां या फेरी) हुई। जब तीसरी (लां) हो जाए तो वर और कन्या अपने अपने आसन पर खड़े हो जावें तो लड़की छाज की कोण से फुल्लियां अग्नि में डालती हुई इस मंत्र को पढ़े—

ओं भगाय स्वाहा इदं भगाय ऐसा कहे।

तब लड़की फुल्लियों को अग्नि में डाले।

चौथी (लां) चुपचाप करे इसमें किसी मन्त्र का उच्चारण न हो, आगे लड़का पीछे लड़की हो इस प्रकार चतुर्थ (लां) करे फिर अपने २ आसन पर वर और कन्या बैठ जावें और पण्डित इस आहूति को मन से देवे।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये।

वर और कन्या सात कदम उत्तर की ओर चलें या पण्डित पत्थर या पटरी पर आटे से सात रेखाएं बनाये और लड़का कन्या के दाएं अंगुष्ठ को पकड़ कर एक एक मन्त्र बोलता हुआ सातों रेखाओं को मिटा देवे या कपड़े की पोटली को पकड़ कर रेखाएं मिटा देवे या कन्या को कहे कि तुम अपने पैर के दाएं अंगुष्ठ या पोटली से मिटाते जाओ और पण्डित इन सात मन्त्रों को बोले—

१ ओं एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु।

२ ओं द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु।

वरोऽग्रे च ततो भूत्वा वध्वास्तूष्णीं परिक्रमेत्।
प्राजापत्यं ततो भूत्वा उदीच्यां क्रामयेत्तु ताम्॥
तूर्य्यें प्रदक्षिणे बोढुः कन्या पश्चात् प्रशस्यते।
धनधान्यसमृद्धिः स्यात् पुत्रपौत्रसुखावहा॥ स्मृतिवचनम्
तूर्यें प्रदक्षिणे चाग्रेः कन्यावित्त विनाशिनी।
पुत्रदारादिसंहर्त्ति वरस्याग्रे करोति सा॥

३ ओं त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु ।
४ ओं चत्वारि मयोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु ।
५ ओं पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।
६ ओं षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।
७ ओं सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु ॥

सप्तपदी

वर उवाच—वर बोला कि—

स्त्रियस्तिष्ठन्ति वामेन त्वं तु मे दक्षिणे स्थिता ।
मया त्वं परिणीतासि दत्ता त्वत्पितृबन्धुभिः ॥१॥

नियम है कि स्त्रियां पति के बांई ओर बैठती हैं और तुम मेरे दांई ओर बैठी हो, तेरे पिता, भाई आदि सम्बन्धियों के देने पर तुम मुझ से विवाही गई हो ।

तदुत्तिष्ठ प्रिये वामं पार्श्वं मे भज सुन्दरि ।
मदनुष्ठितयज्ञादिफलभोक्त्री भविष्यसि ॥२॥

इस लिए हे प्रिये ! उठो और मेरे बांई ओर बैठो, सुन्दरि ! फिर मेरे से किये हुए यज्ञादियों के फल को पाओगी ।

विश्रब्धं ब्रूहि मे सर्वं यत्ते मनसि वर्तते ।
अर्जयिष्यामि ते प्रीतिं कठिनैरपि कर्मभिः ॥३॥

जो भी तेरे मन में है निःसंकोच सब मुझे कहो, मैं कठिनाइयों को झेलता हुआ भी तेरे प्रेम का पालन करूँगा ।

कन्योवाच—लड़की बोली—

न दानेन न वा लाजहोमैः परिणयः स्मृतः ।
सम्पद्यते तदानीं स यदा सप्तपदीक्रमः ॥१॥

विवाह कन्यादान के संकल्प से या फुलियों के हवन से नहीं होता परन्तु वह सात पांव चलने पर होता है ।

यदि त्वं सप्त वाक्यानि निर्व्याजं स्वीकरोषि मे ।
तदाहं संभजिष्यामि वामाङ्गं तव निश्चितम् ॥२॥

अगर तुम छल रहित हो मेरी सात शरतों को मानोगे तो मैं निश्चय ही तुम्हारे बांई ओर आती हूँ ।

भक्ष्यं भोज्यं धनं धान्यं यद् यद् वस्तु गृहे भवेत् ।
तत्राहमधिकर्तव्या मानसंरक्षणाय मे ॥३॥

भक्ष्य भोज्य धन धान्य आदि जो जो भी वस्तु घर में हों वे सब वस्तुएं मेरा मान रखने के लिये मेरे अधीन करना ।

बहिर्यल्लभ्यते द्रव्यं तदानेयं त्वया गृहे ।
गृहादन्यत्र त्यक्तव्यं शयनं भोजनं तथा ॥४॥

घर से बाहर जो भी द्रव्य मिले उसे तुम घर में लाना घर से बाहर सोना नहीं, और भोजन नहीं करना ।

स्वीकरोषि यदैवं ते वामाङ्गं संभजाम्यहम् ।
एवं कन्या सप्तपद्यां प्रथमं वाक्यमब्रवीत् ॥५॥

इस प्रकार अगर तुम्हें स्वीकार हो तो मैं तुम्हारे बांई ओर आती हूँ । इस तरह कन्या सात वाक्यों में प्रथम वाक्य को बोली ।

ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु ।

मदीयान्नादिना त्वमेव स्वामिनी भव: ।

हे प्रिये (एकं) एक कदम (इषे) अन्न के लिये (विष्णुः) विष्णुरूप मैं (त्वा) तुम को (नयतु) ले जाता हूँ ।

संमार्जनं पात्रशुद्धिः पाको गुरुजनार्चनम् ।
गृहकर्माण्यशेषाणि मया कार्याणि सर्वदा ॥१॥

मैं हमेशा सफाई, पात्र-शुद्धि रसोई बुजुरगों की सेवादि घर के तमाम कामों को करूँगी ।

इत्थं नित्यानुवृत्ताहं पालनीया त्वया प्रभो ।
एवं कन्या सप्तपद्यां द्वितीयं वाक्यमब्रवीत् ॥२॥

इस तरह प्रभो, आज्ञाकारिणी मुझे तुम पालन करना, ऐसे कन्या सात वाक्यों में दूसरे वाक्य को बोली ।

ओं द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु ।

हे प्रिये (विष्णुः) विष्णुरूप मैं (त्वा) तुम को (द्वे) दूसरा कदम (ऊर्जे) बल के लिये (नयतु) ले जाता हूँ ।

मातापितृभ्यां स्नेहेन संपाल्यातिप्रयत्नतः ।
दत्तास्मि तुभ्यं सद्बन्धुद्विजदेवाग्निसन्निधौ ॥१॥

मुझे माता पिता ने स्नेह से यत्नपूर्वक पाल कर तुम्हें बन्धु ब्रह्म देवता और अग्नि के सामने दिया है ।

गोत्रं जातिं कुलं चापि तवोपेतास्मि सुव्रत ।
त्वच्चित्ता त्वद्गतप्राणा त्वदादेशपराऽबला ॥२॥

हे सच्चे व्रत वाले ! मैं गोत्र जाति और कुल से तुम्हारी हो गई हूँ । तुम ही मुझ अबला के चित्त प्राण हो और मैं तुम्हारी आज्ञाकारिणी हूँ ।

त्वयैव नाथवत्यस्मात् परिपाल्यास्मि सन्ततम् ।
एवं कन्या सप्तपद्यां तृतीयं वाक्यमब्रवीत् ॥३॥

मैं आप से ही नाथवाली हूँ इसलिए आप ही मेरा लगातार पालन करें, ऐसे कन्या सात वाक्यों में तीसरे वाक्य को बोली ।

ओं त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु ।

हे प्रिये (विष्णुः) विष्णुरूप मैं (त्वा) तुम को (त्रीणि) तीसरा कदम (रायः) धन की (पोषाय) पुष्टि के लिए (नयतु) ले जाता हूँ ।

सुखेषु भवतः सुखं विपदि दुःखमाबिभ्रती ।
प्रियेषु सततं प्रियाण्यरिषु विप्रियं तन्वती ॥
रुषापि परुषस्य सत् प्रियवचोऽभिधासादरा ।
प्रसादसुमुखी सदा दयति ! पालनीया मुदा ॥१॥

हे प्यारे ! आपके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी आपके प्रेमीजनों से प्रेम और शत्रुओं से शत्रुता, नाराजगी और कठोरता में बड़े आदर से मीठा बोलने वाली सुन्दरमुखी मुझको आप प्रसन्नता से सदा पालें ।

एतदिष्टं मम परं कर्तव्यं लोकसंग्रहे ।
एवं कन्या सप्तपद्यां चतुर्थं वाक्यमब्रवीत् ॥२॥

आपने मेरा संसार में प्रेमपूर्वक कर्तव्य पालन करना ऐसे कन्या सात वाक्यों में चौथे वाक्य को बोली ।

ओं चत्वारि मयोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु ।

हे प्रिये (विष्णुः) विष्णुरूप मैं (त्वा) तुम को (चत्वारि) चौथा कदम (मयोभवाय) सुख के लिये (नयतु) ले जाता हूँ ।

स्वाश्रितस्य कुटुम्बस्य धर्ममाश्रित्य सर्वदा ।
कर्तव्यं सर्वथा नाथ पालनं पोषणं त्वया ॥१॥

हे नाथ, आपको धर्म का पालन कर अपने आश्रित परिवार का हमेशा पालन पोषण करना चाहिए ।

गृहोपकरणं यत् किञ्चिद् वसनाभरणादिकम् ।
प्रसन्नचेतसा स्वामिन् तदानेयं सदा मम ॥२॥

हे स्वामिन्, घर की सामग्री और वस्त्र-भूषणादि हमेशा मेरे लिए खुशी से लाना ।

यद्येवं त्वं स्वीकरोषि वामांगं चाश्रये तदा ।
एवं कन्या सप्तपद्यां पंचमं वाक्यमब्रवीत् ॥३॥

यदि आप ये स्वीकार करते हैं तो मैं आपके बांई ओर बैठती हूँ, ऐसे कन्या सात वाक्यों में पांचवें वाक्य को बोली ।

ओं पंच पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ।

हे प्रिये (विष्णुः) विष्णु रूप मैं (त्वा) तुमको (पंच) पांचवां कदम (पशुभ्यः) पशुओं के लिये (नयतु) ले जाता हूँ ।

अद्य प्रभृति मद्हेतोस्तव दासत्वमागतैः ।
सर्वैः बन्धुजनैः सार्द्धं पित्रा तुष्टेन चेतसा ॥१॥

आज से लेकर मेरे कारण झुके हुए सारे बन्धुओं के साथ खुशी से पिता जी ने—

वराय गुणिने तुभ्यं दत्ता संकल्पपूर्विकम् ।
न वक्तव्यं त्वया स्वामिन् किं दत्तं तव पितृभिः ॥२॥

मुझे गुणवान् आप को संकल्प करके दिया हे, स्वामिन्, आपको कभी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि तेरे पिता ने मुझे क्या दिया है ?

मदीयं दुष्टवचनं सोढव्यं कलहे सति ।
भृत्यापराधान् प्रभवः क्षमन्ते किल सर्वदा ॥३॥

झगड़ा होने पर मेरे कठोर वचनों को सहना क्योंकि मालिक नौकर के अपराधों को हमेशा क्षमा करते हैं ।

यद्येवं त्वं स्वीकरोषि वामाङ्गं चाश्रये सदा।
एवं कन्या सप्तपद्यां षष्ठं बचनमब्रवीत् ॥४॥

यदि आप ऐसा स्वीकार करें तो मैं आपके बांई ओर बैठती हूँ, ऐसा कन्या सात वाक्यों में छठे वाक्य को बोली।

ओं षड् ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।

हे प्रिये ! (विष्णुः) विष्णुरूप मैं (त्वा) तुम को (षट्) छठा कदम (ऋतुभ्यः) छओं[1] ऋतुओं के सुख के लिए (नयतु) ले जाता हूँ।

यज्ञादि धर्मकार्येषु तव वामांगमाश्रिता।
अर्द्धं पुण्यं लभेयं वै नत्वहं पापभागिनी ॥१॥

यज्ञादि धार्मिक कामों में आपके बाईं ओर बैठती हुई आधे पुण्य के फल को पाऊँगी परन्तु पाप को नहीं।

---

१ हिम-शिशिर-वसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरत्सु
स्तनतपनवनाम्भोहर्म्यगोक्षीरपानैः।
सुखमनुभव राजन् शत्रवो यान्तु नाशं
दिवसकमललज्जाशर्वरीरेणुपङ्कैः॥

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने,
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोगेष्वनुत्सेकिनी,
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥ शकुन्तलानाटके

स्वगोत्राद् भ्रश्यते नारी विबाहात् सप्तमे पदे।
पतिगोत्रेण कर्त्तव्या तस्याः पिण्डोदकक्रिया॥ हारीतः

पाणिग्रहणका मन्त्रा नियतं दारलक्षणम्।
तेषां निष्ठा तु विज्ञेया विद्वद्भिः सप्तमे पदे॥

यद्येवं त्वं स्वीकरोषि वामांगं चाश्रये तदा ।
एवं कन्या सप्तपद्यां सप्तमं वाक्यमब्रवीत् ॥२॥

यदि आप ऐसा स्वीकार करें तो मैं आपके बाईं ओर बैठती हूँ ऐसे कन्या सात वाक्यों में सातवें वाक्य को बोली—

ओं सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु ।

(सखे) हे मित्र ! (सप्त) सात लोकों में होने वाला (पदा) जो सुख उसको लेने में प्रसिद्ध (भव) बनो और (सा) ऐसी तू (मां) मेरे (अनुव्रता) पीछे चलने वाली (भव) होओ हे मित्र (विष्णु) विष्णुरूप में (त्वा) तुझको उस सुख के लिये सातवां कदम (नयतु) ले जाता हूँ ।

खारा बदलना ।

(स्थान परिवर्तन)

सप्तपदी के बाद कलश को वेदी में रखे और वर उसमें से आम के पत्ते को लेकर इस मंत्र से वधू को जल से अभिषेक करे और अभिषेक करते समय पण्डित इस मंत्र को पढ़े—

ओं आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

(शिवः) कल्ताणरूप (शिवतमाः) अतिशय कल्याण के हेतु (शान्ताः) आरोग्य के करने वाले (शान्ततमाः) बहुत शान्तरूप (याः) जो (आपः) जल देव हैं वह (ते) तुम्हारा (भेषजम्) आरोग्य (कृण्वन्तु) करें ।

---

१ गत्वा पादानि सप्ताय संयोज्य शिरसी च ते ।
कुम्भस्य सलिलं सिंचेदुभयोः शिरसोः स्वयम् ॥
सौभाग्यजननीं देवीं स्मृता दाक्षायणीं शिवाम् । गोभिलगृह्यसूत्रे ।
मैत्री सप्तपदी प्रोक्ता सप्तवाक्याथवा भवेत् ।
सत्तराणां तु त्रिपदी सत्तमानां पदे पदे ॥ इति स्मर्णात्
नोदकेन न वाचा च कन्यायाः पतिरुच्यते ।
पाणिग्रहणसंस्कारात् पतित्वं सप्तमे पदे ॥ निर्णयसिंधौ

कुम्भ से जल लेकर आम के पत्ते से वर अपने आप को अभिषेक करे और पण्डित इस मन्त्र को पढ़े—

ओं आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन महे रणाय चक्षसे।

(आपः) हे जलदेव ! तुम (मयोभुवः) सुख देने वाले (ष्ठा) बनो (नः) हमको (ऊर्ज्जे) अन्न के लिये (दधातन) योग्य करो (महे) महत्त्व के लिये (रणाय) श्रेष्ठता के लिये (चक्षसे) सम्यक् ज्ञान के लिये योग्य करो।

इस मंत्र से भी अपने आपको अभिषेक करे।

ओं यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।

हे जलदेव ! (वः) तुम्हारा (यः) जो (शिवतमः) अत्यन्त कल्याण के देने वाला (रसः) रस है (तस्य) उसको (इह) इस लोक में (नः) हम को (भाजयत) भोगने के योग्य करो, कैसे ? (उशतीः) प्रशस्त (मातरः) माताओं की (इव) तरह—

इस नीचे लिखे मंत्र के पहले भाग से वर अपने आप को अभिषेक करे, दूसरे भाग से जल पृथिवी पर फेंके तीसरे भाग से फिर अपने ऊपर अभिषेक करे।

ओं तस्मा अरंगमाम वः।

यस्य क्षयाय जिन्वथ।

आपो जनयथा च नः

(आपः) जलदेव ! आपने (यस्य) जिस पाप के (क्षयाय) नाश के लिये (नः) हमको पैदा किया है (वः) हम (अरम्) जल्दी (गमाम)

उस को प्राप्त करें (तस्मा) उस जल के लिये हमें (जनयथा) योग्य बनाओ ।

यदि दिन हो तो वर वधू को कहे कि सूर्य्य को देखो और पण्डित इस मंत्र को पढ़े ।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ७ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शहदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।

(तत्) जगत् के (चक्षुः) नेत्र स्वरूप और (देवहितम्) इन्द्रादि देवताओं का हित करने वाला (शुक्रम्) शुद्ध (पुरस्तात्) पूर्व दिशा में (उच्चरत्) उदय होता है इसी की कृपा से (शतम्) सौ (शरदः) शरत् ऋतुओं तक हम (पश्येम) देखते रहें (शतं) सौ शरद् ऋतुओं तक (जीवेम) जीवें और (शतं) सौ शरद् ऋतुओं तक (श्रृणुयाम) सुनते रहें (शतं) सौ शरद् ऋतुओं तक (अदीनः) किसी के सामने हम दीनता को न (स्याम) प्राप्त हों और (शतात् शरदः) सौ साल से भी अधिक (भूयः) बहुत काल तक हम सूर्य्य भगवान् को देखते रहें ।

यदि रात हो तो वर वधू को कहे कि तुम ध्रुव को देखो यदि[1] ध्रुव न भी दीखे तो भी देखती हूँ ऐसा वधू कहे और पण्डित इस मंत्र को पढ़े ।

ओं ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैधि पोष्या मयि मह्यं त्वादाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतम् ।

हे ध्रुव ! तू (ध्रुवं) निश्चल (असि) है (त्वा) तुझ में (ध्रुवं) निश्चल (पश्यामि) देखता हूं हे वधू तू भी इसी के समान (ध्रुवा) निश्चल

---

१. यदि न पश्येत् पश्यामीत्येव ब्रूयात् इति सूत्रम् ।

(एधि) हो (बृहस्पतिः) बृहस्पति ने (त्वा) तुझ को (मह्यं) मुझे (आदात्) दिया (मयि) मेरे द्वारा उत्पन्न की हुई सन्तान की तू (पोष्या) पालन करने वाली हो (मया) मेरी (अपत्या) सन्तान से (प्रजावती) सन्तान वाली तू (शतम्) सौ (शरदः) शरद् ऋतुओं तक (संजीव) जीवित रह ।

वर अपना दायाँ हाथ पीछे से लड़की के दाएँ कन्धे पर रखे और पण्डित इस मन्त्र को पढ़े ।

ओं मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्त-मनुचित्तं ते अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥

हे कन्ये ! (ते) तुम्हारे (हृदयम्) हृदय को प्रजापति (मम) मेरे (व्रते) नियमानुचरण में (दधातु) धारण करे और (ते) तुम्हारा (चित्तम्) चित्त (मम) मेरे चित्त के अनुकूल (अस्तु) हो । और तू (मम) मेरे (वाचं) वचनों और घर सम्बन्धी कामों में (एकमना) अपने पवित्र मन को मेरे मेरे मन के अनुकूल (जुषस्व) कर और वहीं प्रजापति (मह्यं) मेरे सुख के लिये तुझको (नियुनक्तु) लगावें ।

शंखी में आम का पत्ता रखकर ऊपर सन लपेटे पत्ते में सिंधूर डाले पत्ते को स्वर्ण मुँदरी में रखे लड़का इस शंख पत्र सिंधूर को लेकर सिंधूर मस्तक से लेकर पीछे तक गेर दे इसे सुमंगली कहते हैं ।

ओं सुमंगलीरियं वधूरिमा ँ समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ॥

हे सभा के मनुष्यो ! अथवा विवाह की अधिष्ठात्री गौरी आदि देवियो ! (इयम्) यह (वधूः) वधू (सुमंगलीः) श्रेष्ठ मंगल वाली है इस लिये (इमाम्) इस वधू को (समेत) इकट्ठे होकर (पश्यत) देखो (अस्यै)

इसको (सौभाग्यम्[१]) आशीर्वाद (दत्वा) देकर (अस्तम्[२]) अपने २ घर को (याथ) जाइये (वि-परा) नाराज होकर (न) न (इत) जाईये ।

सुमंगली के बाद ।

पण्डित हल पंजाली को लेकर वर कन्या के आगे रखे और इस मंत्र को पढ़े ।

ओं इह गावो निषीदन्तु इहाश्वा इह पूरुषा इहा सहस्त्र दक्षिणो इह पूषा निषीदतु ।

---

१. सुवर्णशणयुक्तेन वध्वाः शंखेन मूर्द्धनि ।
सिन्दूरकरणं कुर्यात् सुवर्णार्थं स्वयं वरः ।। इति वृद्धवसिष्ठः
नो वै विजह्यात्कुलदेशधर्मान् ।
पतिपुत्रान्विता भव्याश्चतस्त्रः सुभगा अपि ।
सौभाग्यमस्मै दद्युर्मङ्गलाचारपूर्वकम् ।।
पतिपुत्रवती नारी स्वरूपगुणशालिनी ।
अविच्छिन्नप्रजासाध्वी सदायासा सुमङ्गलीः ।।
आचारात् स्त्रियः सिन्दूरादीनि कुर्वन्ति । इति गदाधरभाष्ये ।
विवाहे श्मशाने च वृद्धानां स्त्रीणां वचनं कुर्युः ।

२. वेश्मास्तगृहमालये इति रन्तिकोशः ।
कार्य्ये दासी रतौ रम्भा भोजने जननी समा ।
विपत्सु मन्त्रिणी भर्तुः सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता । मनुः
कश्चिद् बलवान् पुरुषः । इति हरिहरः ।
जामातैव दृढपुरुषः । इति रेणक-दीक्षितगङ्गाधरौ ।
दृढपुरुषो जितेन्द्रियः । इति भर्त्तयज्ञः ।
दृढाङ्गपुरुषः । इति निबाहुरामः ।
वरो दृढपुरुषः इति गदाधरः ।
वरस्य वामभागे कन्या ।

(इह) इस वृषभ चर्म पर बैठी हुई तुम्हारे साथ (गावः) गौएँ (अश्वाः) घोड़े (पुरुषाः) पुरुष और (सहस्र) हजारों रुपये जिनकी (दक्षिणः) दक्षिणा है ऐसे (यज्ञ) यज्ञ और (पूषा) पूषा देवता आदि (निषीदतु) स्थित होवें ।

अन्वारब्ध के साथ पण्डित इस एक आहुति को अग्नि में डाले ।

ओं अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ।

वर अरघे में जल को ले और पण्डित इस पूर्णपात्र का संकल्प पढ़े ।

ओं अद्य कृतैतद् विवाह होमकर्मणि कृता कृता वेक्षणरूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतम् (गोत्र का नाम) **गोत्राय** (ब्राह्मण का नाम) **शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणा तुभ्यमहं संप्रददे ।**

ब्राह्मण **स्वस्ति** ऐसा कहे ।

चतुर्थी कर्म

वर अरघे में जल पुष्प सुपारी इलायची दक्षिणा और ऊपर एक परना या तौलिया मौली की तन्द को रखे और पंडित ब्रह्मा की वर्णी का संकल्प पढ़े ।

गौर्ब्राह्मणस्य ग्रामः क्षत्रियस्याश्वो वैश्यस्य शूद्रस्य यथाशक्तिः ।
चतुर्थरात्रावेव चतुर्थीकर्म भवितव्यं परन्तु अस्मिन् प्रान्ते ।।
तस्मिन्नेव दिने तत् कर्म क्रियते अतएव कुष्कण्डिका पुनः न विधेया ।
चतुरशीति दोषाणि कन्या देहे तु यानि वै ।
प्रायश्चित्तकरं तेषां चतुर्थीकर्म ह्याचरेत् ।। मार्कण्डेयः
रात्रौ चतुर्थी कुरुते सा कन्या सुखदा सदा ।
धनधान्यवृद्धिकरी पुत्रपौत्रसमृद्धिदा ।। हारीतः
यदा न कुरुते कर्म चतुर्थी लतमादितः ।
इह जन्मनि वन्ध्या स्यात् वैधव्यं जायते पुनः ।।

ओं अस्यां रात्रौ कर्तव्य चतुर्थी होम कर्मणि कृता कृता वत्तेण रूप ब्रह्म कर्म कर्तुम् (ब्राह्मण के गोत्र का नाम) **गोत्रम्** (ब्राह्मण का नाम) **शर्माणं ब्राह्मण मेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासो भिर्ब्रह्मत्वेन त्वा महं वृणे।**

वर मौलीं की तन्द और परना या तौलिया जल सहित ब्रह्मा को देवे और मौली बांधते समय ब्रह्मा व्रतेन दीक्षामाप्नोति मन्त्र को पढ़े ।

ब्राह्मण परना और दक्षिणा लेकर कहे **ओं वृतोस्मि** वर सुह्मा को कहे **यथा विहितं कर्म कुरु** ब्रह्मा कहे **करवाणि।**

वर दोबारा अरघे में जल पुष्प सुपारी इलायची दक्षिणा और ऊपर परना या तौलिया मौली की तन्द को रखे और पण्डित होता की वर्णी संकल्प पढ़े ।

ओं अस्यां रात्रौ कर्तव्य चतुर्थी होम कर्मणि होतृ कर्म कर्तुम् (गोत्र का नाम) **गोत्रम्** (होता का नाम) **शर्माणम् ब्राह्मणमेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्होतृत्वेन त्वामहं वृणे।**

वर मौली की तन्द और परना या तौलिया जल सहित होता को देवे और मौली बांधते समय होता व्रतेन दीक्षा माप्दोती इस मन्त्र को पढ़े होता परना और दक्षिणा लेकर कहे **ओं व्रतोस्मि** वर होता को कहे **यथा विहितं कर्म कुरु** होता कहे **करवाणि।**

आधार नाम वाली दो आहुतियां

नीचे लिखी हुई इन चार आहुतियों का शेष प्रोक्षणीपात्र में डाले ।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥१॥

(इसे मन से पढ़े)

ओं इन्द्राय स्वाहा इदमिंद्राय ॥२॥

आज्य भाग वाली दो आहुतियां

ओं अग्नये स्वाहा इदमग्नये ॥१॥

ओं सोमाय स्वाहा इदं सोमाय ॥२॥

नीचे लिखी इन घी की पांच आहुतियों का और स्थालीपाक की आहुति का शेष पृथूदक पात्र में डाले और अन्वारब्ध के बिना करे (एक डोना या एक पात्र में जल भर कर रखे इसे पृथूदक पात्र कहते हैं) ।

ओं अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यास्यै पतिघ्नी तनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा इदमग्नये ॥१॥

ओं वायो प्रायश्चित्तेत्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्रह्मणस्त्वानाथ काम उपधावामि यास्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा इदं वायवे ॥२॥

ओं सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यस्यै पशुघ्नी तनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा इदं सूर्याय ॥३॥

ओं चन्द्रमः प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति-रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यास्यै गृहघ्नी तनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा इदं चन्द्रमसे।

ओं गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ति-रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथ काम उपधावामि यास्यै यशोघ्नी तनूस्ता मस्यै नाशय स्वाहा इदं गन्धर्वाय ॥५॥

दूध और फुलियों को किसी पात्र में मिलावे और उसे अग्नि पर जरा गरम कर लेवे इसे स्थालीपाक कहते हैं।

यह एक आहुति केवल स्थालीपाक की है और इस का शेष पृथूदक पात्र में डाले।

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये।

(मन से पढ़े)

ब्रह्मा से अन्वारब्ध करके इन दस आहुतियों को अग्नि में डाले इस एक आहुति को घी और स्थालीपाक को मिलाकर डाले।

अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इद मग्नये स्विष्ट-कृते ॥१॥

घी से हवन करे

ओं भूः स्वाहा इदमग्नये ॥२॥
ओं भुवः स्वाहा इदं वायवे ॥३॥
ओं स्वः स्वाहा इदं सूर्याय ॥४॥

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवया सिसीष्ठाः यजिष्ठा वह्नितमः शोचुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥५॥

ओं सत्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टा अवयद्वनो वरुण ँ रराणो वीहि मृडीक ँ सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम् ॥६॥

ओं अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्ति वाश्च सत्व मित्व मया असि अयानो यज्ञं वहास्यानो धेहि भेषज ँ स्वाहा इदमग्नये ॥७॥

ओ ये ते शतं वरुण ये सहस्र यज्ञियाः पाशा वितता महातः तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णु विश्वे मुन्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यश्च ॥८॥

ओं यदुत्तमं वरुण पाश मस्मद वाधमं विमध्यम ँ श्रथाय अथावय मादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा इदं वरुणाय ॥९॥

ओं प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये ॥१०॥

(मन से पढ़े)

संस्रवप्राशन[१]

प्रोक्षणीपात्र में जो हुत शेष है उसे पण्डित अपनी अनामिका अंगुली से स्पर्श करे फिर वह उस अंगुली में लगे हुत शेष को वर की अनामिका से स्पर्श करावे और वर उसे अपने निचले होंठ पर लगाए।

फिर वर आचमन करे। वर अरघे में जल ले और पण्डित पूर्णपात्र का संकल्प पढ़े।

ओं अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थी होम कर्मणिकृ-ताकृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थं मिदं पूर्ण पात्रं प्रजापति दैवतं (गोत्र का नाम) **गोत्राय** (ब्राह्मण का नाम) **शर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां तुभ्य महं संप्रददे।**

पूर्णपात्र मिट्टी का कसोरा या गड़वी ब्रह्मा को देवे और ब्रह्मा कहे **स्वस्ति।**

पवित्री की गांठ खोलना

पण्डित इस मन्त्र से प्रणीतापात्र में जिसकी ग्रन्थी खोल दी गई है ऐसी पवित्री[२] से वर को प्रणीता के जल से सिंचन करे।

ओं सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।

१—यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्व-किल्विषैः। गीता

२—घृतं पवित्रं कर्मान्ते ग्रन्थीं मुक्त्वा तु तं त्यजत्।
विस्मृत्य यदि ग्रन्थीं तु पवित्रं तु परित्यजेत्॥
चरेत् सान्तपनं कृच्छ्ं तत् किल्विषविशुद्धये। अपरार्के
ब्रह्मग्रन्थिविमोकः

इस मन्त्र में पृथिवी पर जल छिड़के और प्रणीतापात्र को ईशान कोण में उलटा कर देवे ।

ओं दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः ।

(यः) जो शत्रु[1] (अस्मान्) हमारे से (द्वेष्टि) वैर करता है (च) और (यम्) जिससे (वयं) हम (द्विष्म) वैर करते हैं (तस्मै) उसके लिये (आपः) जलदेव (औषधयः) संजीवनी आदि ओषधिएं (दुर्मित्रिया) दुःख देवे वाली (सन्तु) होवें ।

जिस तरह से पहले कुशा[2] बिछाई गई थी इसी तरह पण्डित इकट्ठी करे घी से भिगोकर वर का हाथ लगवा कर अग्नि में डाले ।

ओं देवा गातु विदो गातु वित्त्वा गातु मित मनसस्पत इमं देव यज्ञ ७ स्वाहा वातेधा स्वाहा ॥

पृथूदक पात्र के जल को आम के पत्ते से वर लड़की पर छिड़के और पण्डित इस मन्त्र को पढ़े और मन्त्र के अन्त में वर लड़की का एक दफा नाम उच्चारण करे ।

ओं याते पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निंदिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि साजीर्यत्वं मया सह ॥ श्री (लड़की का नाम) **देवी ।**

१—शठं प्रति शठं कुर्य्यादादरं प्रति चादरम् ।
त्वया मे लुण्ठितौ पक्षौ मया ते मुण्डितं शिरः ॥ राजनीतौ ।
व्रजन्ति ते मूढ़धियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः । किरातार्जुनीये
आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।

२—यज्ञे विवाहे होमे तु कुशानास्तृणुयात् सदा ।
अग्नेर्दोषविनाशाय पुण्यस्यातिशयाय च ॥
ततः स्तरणक्रमेणैतद् बहिरुत्थापयेत् सुधीः ।
अभिघार्य घृतेनैतदधनदग्नौ करेण वै ॥ वशिष्ठवचनम्

हे कन्ये (या) जो (ते) तेरे (प्रतिघ्नी) पति को नाश करने वाला (प्रजाघ्नी) सन्तान को नाश करने वाला (पशुघ्नी) पशुओं को नाश करने वाला (गृहघ्नी) घर को नाश करने वाला (यशोघ्नी) यश को नाश करने वाला (निंदिता) निन्दित (तनूः) शरीर को (तत) इस अभिषेक से (एनां) इस शरीर को (जारघ्नी) उपपति के नाश करने वाला (करोमि) मैं करता हूं (सा) वह (त्वं) शुद्ध तू (मया) मेरे (सह) साथ (जीर्यत्वं) वृद्धावस्था तक सुख भोग ।

वह स्थालीपाक को या लड्डू आदि मिष्टान्न को कन्या के दाएं हाथ में चार दफ़ा मन्त्रों को पढ़ते हुए देवे और वह उस पदार्थ[१] को अवश्य खा लेवे ।

ओं प्राणैस्ते प्राणान् संदधामि ।
ओं अस्थिभिस्तेऽस्थीनि संदधामि ।
ओं मांसैस्ते मांसानि संदधामि ।
ओं त्वचा ते त्वचं संदधामि ।

हे वधू (प्राणैः) अपने प्राणों से (ते) तेरे (प्राणान्) प्राणों को (अस्थिभिः) अपनी हड्डियों से (ते) तेरी (अस्थीनि) हड्डियों को (मांसैः) अपने मांस से (ते) तेरे मांस को (त्वचा) अपनी त्वचा से (ते) तेरी त्वचा को (संदधामि) मैं मेलता हूं ।

वर कन्या के हृदय को स्पर्श करे और पण्डित इस मंत्र को पढ़े ।

१—वरः सक्तुं प्राशयतीति भाष्यात्
भुक्तोच्छिष्टं प्रदायेति गोभिलगृह्यसूत्रात्
स्त्रिया सह वरोऽपि समाचाराद् भोजनं करोति । गदाधरभाष्ये
एकयानसमारोहे एकपात्रेऽत्र भोजनम् ।
विवाहे पथि यात्रायां कृत्वा न च दोषभाक ॥ हेमाद्रौ

ओं यत्ते सुशीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि स्थितं वेदाहं तन्मां तद् विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतम् ।

(सुशीमे) हे सुन्दर अङ्गों वाली (दिवि) आकाश में होने वाले (चन्द्रमसि) चन्द्रमा में (स्थित) स्थित (ते) तेरे (हृदयं) हृदय को (वेद) मैं जानता हूं अब (तत्) उस हृदय से (मां) मुझे पति (विद्यात) जानो और हम दोनों (शतं) सौ (शरद:) शरद् ऋतुओं तक (पश्येम) देखें (शतं) सौ (शरदः) शरद् ऋतुओं तक (जीवेम) जीवें (शतं) सौ (शरदः) शरद ऋतुओं तक (शृणुयाम) सुनें ।

लड़की के पिता ने वर और कन्या को ग्रन्थी बान्धी थी अब उसे खोले ।

(नोट—पहले वर का कंकण खोले फिर कन्या का) ।

वर और कन्या खड़े हों और वर स्रुवे के ऊपर सुपारी पुष्पादि रखे पण्डित के मन्त्र बोलने पर अग्नि[1] में डाले ।

१—वधूदक्षकरस्पृष्टे स्रुवे संस्थापयेद् वरः ।
घृतपुष्पफलादीनि पूर्णार्थं चाहुतिं ददेत् । बृद्धवशिष्ठः
पूर्णाहुत्या सर्वान् कामानाप्नोति ।। वेदवचनम्
अथ पूर्णाहुतिं दद्यात्, गन्धपुष्पफलान्विताम् । (शौनकः)
साक्षतामूर्द्धकायश्च समपाच्छक्रदिङ्मुखः ।
ततो होमवशिष्ठेन घृतेनापूर्य्य वै स्रुवम् ।।
निधाय पुष्पं तस्याग्रे स्रुवेणाधो मुखेन ताम् ।
संदर्भेण समाच्छाद्य मूलेनाञ्जलिनोत्थितः ।। वायुपुराणे
मूर्द्धानमिति मंत्रेण संस्रवेण च धारया ।
दद्यादुत्थाय पूर्णान्तु नोपविश्य कदाचन ।। अग्निपुराणे
विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौलकर्मणि ।
गर्भाधानादि संस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत् ।।
विवाहादि क्रियायां च शालायां वास्तुपूजने ।
नित्यहोमे वृषोत्सर्गे पूर्णाहुतिं न कारयेत् ।। प्रयोगरत्न

ओं मूर्द्धानं दिवोऽरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आ जात मग्निम्। कवि ँ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयंत देवाः स्वाहा इदमग्नये।

स्रुवे से भस्म लेकर वर इन मन्त्रों को पढ़ता हुआ अपने अंगों पर भस्म लगाए।

ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः (मस्तक पर)

ओं कश्पस्य त्र्यायुषम्। (गरदन पर)

ओं यद्देवेषु त्र्यायुषम्। (दाहिने कन्धे पर)

ओं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्। (हृदय पर)

ग्रहविसर्जन

यांतु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च॥

अग्निविसर्जन

गच्छ २ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

संकल्प

उपाध्याय दक्षिणा

ओं अद्य कृतैद् ब्राह्मण द्वारा मंत्र पाठोच्चारण सांगता सिद्ध्यर्थं इदं दक्षिणा द्रव्यं रजतं

१—एवं वध्वापि त्र्यायुषं कुर्यात तन्नो हृदयस्य स्थाने ... इति विशेषः।

चन्द्रदैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

गो-दान

ओं तत्सदद्य (वर के गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नोहं (वर का नाम) जन्म नामतः प्रसिद्धनामतः शर्माहं/वर्माहं पत्नी प्रतिग्रह दोष निवारणार्थं इमां गां सवत्सां यथाशक्ति सामग्री संयुतां रुद्र दैवतां (ब्राह्मण के गोत्र का नाम) गोत्राय (ब्राह्मण का नाम) शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे।

गोदान के अभाव पर

ओं तत् सदद्य (वर के गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नोहं (वर का नाम) जन्म नामतः प्रसिद्धनामतः शर्माहं/वर्माहं पत्नी प्रतिग्रह दोष निवारणार्थं गो-दान प्रतिनिधि भूत-मिदं द्रव्यं रजतं चन्द्र दैवतम्/स्वर्णं अग्नि दैवतम् (ब्राह्मण के गोत्र का नाम) गोत्राय (ब्राह्मण का नाम) शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे।

गोत्रोच्चारण

ओं अद्यकृतैतत् स्वकीय पुत्री/पुत्र विवाह कर्मणि कारित ब्राह्मण द्वारा शाखोच्चारण सांगता सिद्ध्यर्थं इदं दक्षिणा द्रव्यं रजतं चन्द्र दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मण तुभ्य महं संप्रददे।

कन्या-दान

ओं अद्य कृतैतत् कन्या दान प्रतिष्ठार्थं इदं दक्षिणाद्रव्यं रजतं चन्द्र दैवतं यथा नाम गोत्राय कुल पुरोहिताय तुभ्यमहं संप्रददे ।

हवन

ओं अद्य कृतैतत् चिरकाल सौभाग्य वृद्ध्यर्थं विवाह अंगभूत कारित ब्राह्मण द्वारा हवन कर्म प्रतिष्ठार्थं इदं दक्षिणा द्रव्यं रजतं चन्द्र दैवतं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

जप का संकल्प

ओं अद्य विवाह कर्मणि सूर्यादि नवग्रह जनितं यत् सर्वारिष्टं तत् निवारणोत्तार शुभफल प्राप्ति हेतवे च मृत्युंजय मन्त्रस्य (संख्या का नाम) संख्या परिमितजप ब्राह्मण द्वारा अहं कारयिष्ये तत् कारयितुं एभिर्वर्णद्रव्यैः अमुकामुक गोत्रान् अमुकामुक शर्मणो ब्राह्मणान् जापकत्वेन युष्मान् अहं वृणे ।

पुष्पांजलियाँ

सब स्त्री-पुरुष फूलों को लें और पण्डित के इन श्लोकों को पढ़ने पर प्रत्येक श्लोक के बाद वधू के ऊपर फूल डालें।

गायत्री ब्रह्मणो यद् वत् लक्ष्मी हैत्यरिपोर्यथा॥ उमा यथा महेशस्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१॥ सुवर्च्चत्रा यथार्कस्य यथा चंद्रस्य रोहिणी। मदनस्यरतिर्यद् वत् तथा त्वंभव भर्त्तरि ॥२॥ सुदक्षिणा दिलीपस्य वसन्तस्य धृति र्यथा॥ अरुन्धती वसिष्ठस्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥३॥ रामस्य च यथा सीता विनता कश्यपस्य च॥ पावकस्य यथा स्वाहा तथा त्वां भव भर्त्तरि ॥४॥ उषा यथा ऽनिरुद्धस्य दमयन्ती नलस्य च॥ सती च ऋतुपर्णस्य तथा त्वां भव भर्त्तरि ॥५॥ पुलोमजा यथेंद्रस्य वसुदेवस्य देवकी॥ लोपामुदा ह्य गस्त्यस्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥६॥ सूर्यस्य तपती चैव वसुदेवस्य रोहिणी॥ चन्द्रस्य रोहिणी यद् वत् तथा त्वां भव भर्त्तरि ॥७॥ शंतनोश्च यथा गंगा सुभद्रा ह्यर्जुनस्य च॥ धृतराष्ट्रस्य गांधारी तथा त्वां भव भर्त्तरि ॥८॥ गौतमस्य यथा हल्या द्रौपदी पाण्डवे

यथा ॥ बालिनश्च यथा तारा तथा त्वं भव भर्त्तरि
॥९॥ मन्दोदरी रावणस्य राघवस्य च जानकी ॥
कुन्ती च पंडुराजस्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१०॥
अत्रे यथानुसूया च जमदग्नेश्च रेणुका । कृष्ण-
स्य रुक्मिणी यद् वत् तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥११॥
भास्करस्य प्रभायद्वद् रोहिणी सिन्धुजस्य च ॥
कुजे तेजो मयी यद् वत् तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१२॥
यथा च बोधिनी सौम्ये भारती वाक्पते यथा ॥
भार्गवे बलिनी यद् वत तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१३॥
सूर्य पुत्रे यथा सौम्या तमसम् तामसी यथा ॥ केतौ
भोगवती यद् वद् तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१४॥ वास-
वस्य यथेन्द्राणी काली वैश्वानरस्य च ॥ धर्मिणी
धर्म्मराजस्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१५॥ निरृते-
श्च धृति यद् वद् वारुणी वरुणस्य च ॥ वायो
र्वेग वती यद् वत् तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१६॥
यक्षिणी धनदे यद् वत् पार्वती शंकरस्य च ॥ सावित्री
वेधसो यद् वत् तथा त्वां भवभर्त्तरि ॥१७॥ अनंतस्य
यथा लक्ष्मी र्वसुदेवस्य रोहिणी ॥ रेवती बलभद्र-
स्य तथा त्वं भव भर्त्तरि ॥१८॥ धन पुत्र वती
साध्वी सततं भर्त्तुं वल्लभा ॥ मनोज्ञा ज्ञान सरिता

तिष्ठ त्वं शरदा शतम् ॥१९॥ जीव सूर्वी रसूर्भद्रे बहु सौख्य समन्विता ॥ सुभगा भोग संपन्ना यज्ञ-पत्नी पतिव्रता ॥२०॥ अतिथी नागतान् साधून् बालान् वृद्धान् गुरूंस्तथा ॥ पूजयन्ति यथा न्यायं शश्वद् गच्छंतु ते समाः ॥२१॥ पृथिव्यां यानि रत्नानि गुण वंति गुणान्विते ॥ तानि आप्नुहि त्वं कल्याणि सुखिनी शरदां शतं ॥२२॥

वर-वधू दोनों पर फूल डालें ।

पद्मा माधवयो र्नगेन्द्र तनया नागेन्द्र केयूरयोः स्वाहा पावकयो रमर्त्य तटिनी कल्लोलिनीनाथयोः ॥ पौलोमी पुरुहूतयो रथरतो पंचास्त्रयोः प्रेमवद् दंपत्यो र्युवयोश्चिरं भवतु तत् सौभाग्य सौख्यान्वितम् ॥२३॥ लक्ष्मी र्यथा सकल देव गणारि शत्रौ गौरी यथा पशुपतौ च शची सुरेंद्रे ॥ गायत्र्य पीह परमे-ष्ठिनि संप्रसक्ता तद् वद् भवत्व मपि भर्त्तरि नित्य-रक्ता ॥२४॥ यद् वल् लक्ष्मी मधु मथनयोः पत्रिणी चक्र नाम्नो र्यद् वद् नित्यं कुमुद शशिनोः पद्मिनी सूर्ययोश्च । गाढप्रेम्णो गिरिश शिवयोः सुप्रसिद्धिश्च यद् वद् जाया पत्यो र्भवतु भवतो स्तद् वदेव त्रिलोके ॥२५॥

केवल वर के ऊपर फूल डालें।

अत्रि कश्यप वसिष्ठ गौतम व्यास गालव पुलस्त्य कौशिकाः ॥ गाधि शौनक मरीचि नारदा मंगलं दधतु ते ऽभिषेकजम् ॥२६॥ सूर्य्य सोम कुज चन्द्र नन्दना जीव शुक्र शनि राहु केतवः ॥ विष्णु कुम्भसुत शंकरादयो मंगलं दधतु ते ऽभिषेकजम् ॥२७॥ ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः शक्रः सुराणां पतिः विष्णु यंज्ञपति हंवि हुंतपति धंर्मः पितृणां पतिः ॥ प्राणो देहपतिः सदा गतिरियं ज्योतिष्पति चंद्रमाः सर्वे ते पतयः कुबेर सहिताः कुर्वंतु वो मंगलम् ॥२८॥ मत्स्यः कूर्म्म तनु र्वराह नृहरिः श्रीवामनो भार्गव स्तद् वद् दाशरथिश्च यादव पति बुंद्धोथ कल्कीपतिः ॥ अन्ये चापि सनत्कुमार कपिल प्रख्याः कलांशा हरेः सर्वे ते कलि कल्मषघ्न चरिताः कुर्वंतु वो मंगलम् ॥२९॥ आदित्यो ऽग्नि युतः शशी सवरुणो भौमः कुमारान्वितः सौम्यो विष्णु युतो गुरुः स मघवा देव्या युतो भार्गवः ॥ स ब्रह्मा रविजो गणेश्वर-युतो राहु भुंजंगेश्वरो मांगल्यं सततं हराच्चंन रताः कुर्वंतु सर्वे ग्रहाः ॥३०॥ आयु र्द्रोणसुते श्रियो

दशरथे शत्रुक्षयो राघवे ऐश्वर्य्यं नहुषे गतिश्च पवने मानं च दुर्य्योधने ॥ शौर्य्यं शांतनवे बलं हलधरे सत्यं च कुन्ती सुते विज्ञानं विदुरे भवंतु भवतः कीर्तिश्च नारायणे ॥३१॥ आयुष्मान् बहुपुत्रवान् भव चिरं श्रीमान् यशस्वी भव प्रज्ञावान् भव भूरि भूत करुणो व्यापार दक्षो भव ॥ तेजस्वी भव वैरि दर्पं दलने दानैक निष्ठो भव श्री शंभो भंव पाद पूजन रतः सर्वोप कारी भव ॥३२॥ आयुर्बलं विपुल मस्तु सुखित्व मस्तु सौभाग्य मस्तु विशदा तव कीर्ति रस्तु ॥ श्रेयो स्तु धर्म्मं मति रस्तु रिपु क्षयोऽस्तु सन्तान वृद्धि रभि वांछित सिद्धि रस्तु ॥३३॥ दीर्घायु र्भव जीव वत्सर शतं नश्यंतु सर्वापदः स्वास्थ्यं संभज मुंच चंचल धियं लक्ष्म्यैक नाथो भव ॥ किं ब्रूमो भृगु गौतमात्रि कपिल व्यासादि भि र्भाषितं यद् रामस्य पदाभिषेक समये तच्चास्तु ते मंगलम् ॥३४॥ याव दिंद्रादयो देवा यावच्चद्र दिवाकरौ ॥ यावद् धर्म्मं क्रिया लोके तावद् भूयात् स्थिति स्तव ॥३५॥ इति ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!

पितृ-वन्दना

मीमांसायुगले सुनिर्मलधियां धीकाञ्चनेचोपले
तर्के चार्ककरप्रदीप्तमतिभिर्गम्येऽभवद् योऽसमः ।
दैवज्ञागमपारगं सुकविता षड्दर्शनी मार्मिकम्
यंभूदेव गुरुं गुरुं कृतवतां वैबुध्यजन्यं यशः ॥१॥
यद् यशः कुसुमं सर्वा दिशः कुर्वन्त्यलंकृतम्
तातं जमीतारामाख्यं तं वन्दे बुधवन्दितम् ॥२॥
प्रेक्षावतामद्वितीयमखिलागमपारगम् ।
शिष्यकल्पतरुं वन्दे श्रीगुरुं परमेश्वरम् ॥३॥

मैं इस शाब्धि के परमोच्च विद्वान् पद वाक्य प्रमाण कुशल साहित्य कर्णधार दैवज्ञागम पीठाधीश भारत राष्ट्रपति के प्रधान तथा राज पंडित रामेश्वर प्रसाद दसमना जी तथा रामनाथ (भाट्टा) जी का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इसके लिखने में कई स्थलों में शास्त्रीय परामर्श दिये ।

श्री गणेश सूनु श्रीराम दत्त कृता वाजसनेयि यजुर्वेदीय कात्यायन सूत्रवतां विवाह पद्धति: समाप्ता ।

मुद्रक : यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६